# हलदूण

सा विद्या या विमुक्तये

राजकीय महाविद्यालय नगरोटा सूरियां (हि०प्र०)



## 2016-17

**GOVT. DEGREE COLLEGE, NAGROTA SURIAN**

**Distt. Kangra (H.P.)**

कॉलेज के प्रथम पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि
श्री नीरज भारती, माननीय मुख्य संसदीय सचिव (शिक्षा) के साथ पुरस्कार विजेता

रूसा जागरूकता अभियान के तहत कॉलेज व स्थानीय स्कूल के छात्र–छात्राएं
स्कूल प्रिंसीपल श्री हरभजन सिंह व कॉलेज स्टाफ के साथ

हिमाचल प्रदेश सरकार

**वीरभद्र सिंह**
मुख्यमंत्री
हिमाचल प्रदेश

# संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय डिग्री कॉलेज नगरोटा सूरियां जिला कांगड़ा द्वारा 'हलदूण' कॉलेज पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

कॉलेज पत्र–पत्रिकाओं का विद्यार्थियों में सृजनात्मक एवं रचनात्मक लेखन में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसके साथ ही, यह पत्रिकाएं वर्ष भर कॉलेज स्तर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों को उजागर करने में भी बेहतर माध्यम बनती हैं। सबसे महत्वपूर्ण कार्य, विद्यार्थियों को लेखन के प्रति प्रोत्साहित करने और उनमें रचनात्मक सोच को विकसित करने के लिए ये पत्रिकाएं हमेशा फायदेमंद साबित होती हैं।

मुझे विश्वास है कि कॉलेज पत्रिका में प्रकाशित सामग्री विशेषकर लेख एवं महत्वपूर्ण जानकारियां पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(वीरभद्र सिंह)

**Neeraj Bharti**
Chief Parliamentary Secretary
Himachal Pradesh

# Message

It gives me immense pleasure to know that Govt. Degree College, Nagrota Surian of Distt. Kangra is publishing its college magazine "Haldoon".

College magazines play a vital role in all round development of students, apart from providing them a platform to express their views. I sincerely hope that the magazine would carry some interesting write-ups regarding rich cultural heritage of the state.

I wish the publication a success.

*Neeraj Bharti*

**प्रो० चन्द्र कुमार चौधरी**
अध्यक्ष, हि०प्र० अन्य पिछड़ा
वर्ग वित्त एवं कल्याण बोर्ड
एवं पूर्व लोकसभा सांसाद

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजकीय महाविद्यालय नगरोटा सूरियाँ (कांगड़ा) 'हलदूण के नाम से कालेज की पत्रिका का प्रवेशांक निकाल रहा है। हलदूण नामकरण हमें उन हजारों लोगों की स्मृति दिलाता है जिन्होंने देश के विकास की खातिर अपना सर्वस्व त्याग दिया। वहीं 'हलदूण' नामक पत्रिका बच्चों को सृजन का अवसर प्रदान करेगी। निर्जन हुई स्थली के नाम से सृजन का मंच एक अच्छी शुरूआत है। मैं इसके लिए सबको बधाई देता हूँ। और पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(चन्द्र कुमार)

पूर्व सांसद

कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य
**डॉ. अशोक अवस्थी**
प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय
बासा (गोहर), जिला मंडी, हि.प्र.

# संदेश

यह परम हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय नगरोटा सूरियां अपनी वार्षिक पत्रिका 'हलदूण' का प्रवेशांक प्रकाशित कर रहा है ।

शिक्षा का उद्देश्य एक समग्र व्यक्तित्व का विकास सुनिश्चित करना है और शिक्षा संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्र –पत्रिकाएं उदीयमान प्रतिभाओं को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे सृजनात्मकता का पोषण संभव हो पाता है। इन नवांकुरित लेखन प्रेमियों के लिए अंतःकरण से ये शब्द स्वतः ही फूट पड़ते है :–

"ऐ मन! तूने फैसला कर ही लिया लेखन के लिए"

साहित्य समाज का दर्पण है। हमें उस समाज में जागृति लानी है, जो अभी भी स्वयं के स्वरूप से अपरिचित है। यह कार्य साहित्य रूपी दर्पण के माध्यम से समाज के सम्मुख आकार नवीन चेतना का संचार करने में सफल होगा।

'कदम चूम लेती है खुद आ के मंजिल यदि मुसाफिर हिम्मत न हारे "

मेरा विश्वास है कि पत्रिका में ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी सामग्री संकलित होगी जिससे हमारी भावी पीढ़ी व पाठक वर्ग इन विचारों से पूर्णतया लाभान्वित होगा ।

'हलदूण' के प्रवेशांक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मैं कामना करता हूँ कि आने वाले वर्षों में महाविद्यालय व इसकी पत्रिका और अधिक ऊंचाइयाँ छूए।

डा॰ अशोक अवस्थी
प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय
बासा (गोहर) जिला मण्डी हि॰प्र॰

पवन कुमार धीमान
जिला परिषद सदस्य

# संदेश

नगरोटा सूरियां में कॉलेज खुल जाने से बच्चों की प्रतिभा खनन के समग्र द्वार खुल गए हैं। **'हलदूण'** नामक पत्रिका की शुरूआत कर कॉलेज न केवल विद्यार्थियों को एक नया मंच दे रहा है, अपितु हलदूण नाम पर पत्रिका का नाम रखकर उस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को श्रद्धांजलि दी जा रही है जिसने देश के विकास में स्वयं उजड़ कर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। पौंग झील में समाहित हलदूण घाटी की स्मृति को समर्पित कॉलेज पत्रिका का नामकरण अपने आप में एक ऐतिहासिक शुरूआत है। मैं पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए कॉलेज प्रशासन को बधाई देता हूँ।

पवन कुमार धीमान

जिला परिषद सदस्य

नगरोटा सूरियां वार्ड

**शुभकरण चौधरी**
**जिला परिषद सदस्य**

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजकीय महाविद्यालय नगरोटा सूरियां (कांगड़ा) 'हलदूण नाम से कॉलेज पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित कर रहा है। इसके लिए मैं कॉलेज प्रशासन को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि कॉलेज की उन्नति के साथ पत्रिका भी समग्र उन्नति करे। हमारे क्षेत्र के बच्चों को अपनी प्रतिभा को बढ़ाने का भरपूर अवसर मिले। 'हलदूण' का स्मरण पत्रिका के माध्यम से होता रहेगा, इसके लिए कॉलेज प्रशासन को बधाई।

शुभचिन्तक
शुभकरण सिंह
जिला परिषद सदस्य
धाऊ द्वितीय वार्ड

**बीना धीमान**
**पूर्व जिला पार्षद**
**एवं सदस्य महिला कल्याण बोर्ड (हि.प्र.)**

# संदेश

राजकीय महाविद्यालय नगरोटा सूरियां अपनी कॉलेज पत्रिका का प्रवेशांक निकाल रहा है। यह जानकर अति हर्ष हो रहा है। 'हलदूण' नाम जो अतीत की विरासत को संजोए हुए है, पत्रिका का सुन्दर नाम है। इसमें भूगोल, सस्कृति व इतिहास का बोध है। पत्रिका का हलदूण नामकरण इन सब बिन्दुओं को जिलाए रखेगा। सृजन का यह मंच भावी पीढ़ी को जहां हमारे विस्मृत इतिहास से जोड़ेगा, वहीं नूतन विचारों को छपने का पात्र बनेगा। मैं इसके लिए कॉलेज प्रशासन को बधाई देती हूँ।

बीना धीमान

पूर्व जिला पार्षद

# प्राचार्य की कलम से

शिक्षा व्यक्ति का ऐसा आभूषण है, जो उसके आंन्तरिक गुणों का विकास करके उसे सभ्य एंव सर्वगुण सम्पन्न बनाता है। शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित लोगों की तुलना में अधिक जागरुक, संवेदनशील एंव अधिक कार्यकुशल होता है। अतः प्रत्येक को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। शिक्षा ही मानव की उन्नति का मूल मंन्त्र है। ज्ञान जहां व्यक्ति को उसके कर्तव्यों एंव दायित्वों के प्रति सचेत करता है, वहीं समाज में सुरक्षा व सम्मान का आधार भी बनाता है। शिक्षण संस्थान इस ज्ञान प्रापति के स्रोत हैं। शिक्षण संस्थानों को दूसरे अर्थो में मानव निर्माण की कार्यशाला भी कहा जाता है। अन्य औधोगिक वर्कशाप में तो वस्तुओं का निर्माण होता है लेकिन शौक्षणिक वर्कशाप में 'मानव निर्माण' किया जाता है। मै समझता हूं कि इस मानव निर्माण की कार्यशाला में आप जब तक रहें, इसके समस्त उपकरणों का सदुपयोग करें ताकि आपके व्यक्तित्व व चरित्र का उचित निर्माण हो सके और आप अच्छे नागरिक बनकर देश के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

मानव निर्माण व चिन्तन सृजन में एक उपकरण और अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण कालेज की पत्रिका होती है जो नवसिखुओं को अपनी अल्हड़, अविकसित व अप्रस्फुटित भावनाओं को प्रस्फुटित व अंकुरित होने का अवसर प्रदान करती है। यह एक ऐसा मंच है जो स्वतंन्त्र चिन्तन ब मन माफिक भावनाओं के सृजन का अवसर देता है, इस समंच की सीढी पाकर अल्हड़ भावनाएं परिपक्वता की ओर वढती हैं। यश, मान कीर्ति, मनोरंजन धैर्यवर्धन व पहचान के स्वर यहीं से फूटने लगते है। अध्ययन के साथ, अध्ययन की प्रभावन्ति से उभरे मन के भावों का दौर है और पत्रिका, जो आपके छात्र जीवन के अनुभवों को संजोकर रखती है। भावनाओं को पुष्पित और पल्लवित करने वाले इस उपकरण का सभी विधार्थियों को उपयोग करना चाहिए ऐसी मेरी मंशा और उम्मीद है।

डा० एच० एल धीमान्

# सम्पादकीय......

## हलदूण नाम क्यों?

हल व दूण दो शब्दों से निर्मित शब्द का अभिप्राय है हल के माध्यम से दोगुना पैदावार अर्थात जिस क्षेत्र मैं हल की जोत से दो गुना पैदावार होती रही हो उस क्षेत्र को हलदूण कहा गया। अंग्रेजी में इसका मतलब ग्रानरी भी है अर्थात अनाज का भवन। व्यास नदी की उपत्यका व व्यास नदी की सहायक नदी गज के साथ लगती धमेटा उपत्यका के बीच एक विशाल भू–भाग, लगभग 45 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला है, जिसका अधिकाशं हिस्सा समतलीय व नहरी था, अत्यधिक उपजाऊ था, यहां नमक और मिट्टी के तेल के सिवाय हर प्रकार के अन्न की पैदावार होती थी, उसे हलदूण कहा जाता था। रियासती युग में प्रमुखतः गुलेर व डाडासिवा रियासत का यह भाग प्राकृतिक रूप से मालामाल था। स्वतन्त्रता से पूर्व ही ब्रिटिशों को इसके भूगोलीय स्वरूप पर आंख थी क्योंकि सिवा की ओर से पनप रही उपत्यका व दूसरी और धमेटा की ओर की उपत्यका का तलवाड़ा से दस कि.मी. ऊपर संगम पौंग गांव नामक स्थान पर इस ढंग से था कि वह स्थान संकरा हो गया था। व्यास व गज इससे पहले ही सोथल नामक स्थान पर हाथ मिला चुकी थीं, इसलिए बिजली वैज्ञानिकों की नजर में बांध निर्माण का यह उत्तम स्थल था। सन् 1926–27 में यहां पहला सर्वे हुआ। यह भी सर्वविदित है कि इसे उजाड़ने के पीछे राजस्थान की उस मीलों लम्बी मरू भूमि को उपजाऊ बनाने की मंशा थी, यहां पर किसी जमाने में प्रति कि.मी. जनसख्या दर पांच व्यक्ति थी और कहीं कहीं तो एक व्यक्ति भी थी। स्वतन्त्रता के पश्चात व भाखड़ा व्यास प्रवन्धक बोर्ड के उदयन से, साथ में भाखड़ा बांध के सफल क्रियान्वयन ने इस विचार को और अग्नि दी और सन 1955 में भूभार्गीय सर्वेक्षण हुआ। 1961 में भारत के पहले मिट्टी से बनें बांध का निर्माण शुरू होकर सन 1974 में पूर्ण हुआ। समुद्र तल से 450 मीटर ऊंचाई पर बने इस बांध की अपस्ट्रीम लम्बाई 41 कि.मी व चौड़ाई 2 कि.मी. है। इसके निर्माण से 150000 जनता विस्थापित हुई। डैम के भू तल से ऊंचाई 1430 फीट है। रिजर्वायर की लम्बाई 41 किमी व चौड़ाई 19 किमी है जिसमें छः बिजली के निर्माण की इकाईयां है जिसमें 600 मैगावाट बिजली पैदा होती है। इसे 'व्यास डैम के नाम से भी जाना जाता है। तब बांध के कैचमैण्ट क्षेत्र में 94 से अधिक गांवों की 5,000 एकड भूमि को भू–अधिग्रहण अधिनियम 1894 के तहत अधिकृत किया गया था। जिसमें नूरपुर व हरा तहसील के 339 राजस्वी टीके शामिल थे। इनमें 223 तो पूर्णतः झील की परिधि में आ गए 116 टीके

अंशतः इसकी जद में आए। करीब यहां बसने वाले 30,000 परिवार प्रभावित हुए। विस्थापितों की भूमि का मुआवजा निर्धारण हेतु जमीन को आठ श्रेणियों में बांटा गया। 1962–63 की जमाबन्दी के मुताबिक नहरी दो फसली श्रेणी का मुआवजा 140 रू0 प्रति कनाल निर्धारित किया गया जो बाद में 650 रू0 प्रति कनाल कर दिया। तब 9.7 कनाल को एक एकड़ आकां गया। सन् 1955 में भूगर्भी सर्वेक्षण हुआ, जो सन् 1974 के अन्त तक पूर्णतः मुक्कमल हो गया। आज यहां से 600 मैगावाट बिजली पैदा होती है। भारत की इस बहु बहुउद्देशीय परियोजना से अब पंजाव, हरियाणा सहित राजस्थान को बिजली के साथ पानी मिलता है। राजस्थान की मरू भूमि को तो संजीवनी मिल गई है, वहां जनसंख्या घनत्व भी बढ़ गया है और हरियाली के साथ रिकार्ड पैदावार भी।

**हलदूण की संस्कृति :** संस्कृति से हमारा अभिप्राय मानव के रहन सहन, खान पान, आचार–विचार व धर्म त्योहार आदि से है। हालांकि हर घर का अपना कल्चर होता है उसी तरह समुदाय विशेष का तथा उसी तर्ज पर क्षेत्र व अंचल विशेष, का भी अपना कल्चर होता है। कहा जाता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। बताया जाता है कि जब सदियों पूर्व राजपूतों के गढ़ राजस्थान में जब मुगलों ने हमले किये तो बहुत से राजा व उनकी प्रजा पहाड़ों व वनों की और कूच कर गए थे। सदियों पहले मैदानी क्षेत्र से आए लोग इस हलदूण में बस गए थे। दरियाई क्षेत्र होने के कारण तब यह धरा सरकण्डों से भरी थी जिसमें सदियों पहले आबाद किया और यह हलदूण बनी जिसे बाद में 'हार्ट आफ कांगड़ा' कहा जाता था बाद में इन्हीं लोगों को मुरब्बों के रूप में राजस्थान की भूमि आंबटित हुई, कृषि व हलवाही जिनका पेशा था। हलदूण में भी अधिकांश कामगार लोग बसे थे जिनका मुख्य धन्धा कृषि था। हालांकि दूसरी जातियों के लोग भी थे परन्तु समाज में वर्चस्व व रहनुमाई ही उनकी फितरत थी। इसलिए यहां मुख्य संस्कृति कृषि थी। कृषि से ही जीवन धारा आगे बढ़ती थी जिसमें जुड़ जाते थे हमारे रीति रिवाज व आचार विचार। इस कृषि कल्चर घाटी में 30,000 परिवार डूब गए, जिसमें उनके अपने देवी–देवता थे, अपनी–अपनी बस्तियां थी, पूजा स्थल थे, जीवन यापन व आचार व्यवहार, रिश्तेदारी, सगे सम्बन्धियों की सांस्कृतिक विरासत थी, तथा उनकी आस्थाओं के प्रतीक मठ व मन्दिर, मस्जिदें, गुरूद्वारे सब पानी में डूब गए। अब स्मृतियां शेष हैं, नई पीढ़ी तो उससे भी अपरिचित है यहां बहुत सी सांस्कृतिक स्मृतियां झील बनने के साथ पानी में डूब गई, वहीं पुरानी पीढ़ी के गमन के साथ बची–खुची स्मृतियों की धरोहर पूर्णतः विस्मृत हो जाएगी। जबकि हलदूण की आधी धरा को सींचने वाली गज खडड से निकलने वाले 'रूल' कूहल अपने उन गीतों का इतिहास संजोये है। बताया जाता है कि राजाओं के जमाने में जब हलदूण को सींचने वाली रूल कूहल में पानी नहीं चढ रहा था तो तत्कालीन रियासती नरेश ने अपनी बडी बहु की बलि देकर यहां बहु की कुर्बानी दी थी और पानी से

हलदूण मालामाल हुई थी। ऐसा सुना है कांगड़ा जनपद में विशेषकर इस घाटी में रानी की कुर्बानी का प्रसग बड़े चाव से गाया जाता है। उसके बोल अब भी उस अतीत का स्मरण कराते हैं। गवैयों के मुख से उस हृदय विदारक घटना को सुनकर आज भी आंखों में बरबस आंसू आ जाते हैं। पंजी दा मेला, महुए दा पीर, बल्ले दा पीर, बाथू की लड़ी, पंजराल का गुरूद्वारा, पंचवड का गुरूद्वारा व अन्य कई सांस्कृतिक स्थल व धटनाएं हैं जो अब झील में समा गई हैं, सिर्फ स्मृतियां शेष हैं।

हलदूण से विस्थापित अधिकांश जनता नूरपुर, ज्वाली व नगरोटा सूरियां पट्टी में बसी है। नगरोटा सूरियां पौंग झील की तलहटी में है। सरकार द्वारा कॉलेज के रूप में नगरोटा सूरियां की जनता को एक बड़ी सौगात ही है। यह कॉलेज उन्हीं हलदूण वासियों की नूतन पीढ़ी व हलदूण की उजड़न से प्रभावित आस पास की जनता का मानसिक पोषण कर रहा है। इसलिए कॉलेज के मानसिक मंच अर्थात पत्रिका का नामकरण 'हलदूण' रखना उन हलदूण वासियों के लिए हमारी छोटी सी श्रद्धांजलि है। शायद हलदूण नामक पत्रिका के पन्नों से हम उन लम्बे–लम्बे लहलहाते खेतों, सुदूर उड़ती कूंजों, चरते पशुओं, बहती कूलहों, मन्दिर में बजती घंटियों, गुरूद्वारों में गूंजती गुरवाणी, मेहनती कृषकों को अपने स्मरण में संजो सकें। और नई पीढ़ी उस बलिदान का मोल जान सके, नामकरण के पीछे यही हमारी मंशा है।

डॉ॰ एच॰ एल॰ धीमान

# हलदूण

## हिन्दी अनुभाग

## सत्र 2016-17


**प्राध्यापक सम्पादक**
एच.एल. धीमान

**छात्र–सम्पादिका**
अपर्णा मन्हास
व दिव्या भारती

# सम्पादक छात्रा की कलम से.....

1. **प्रवेशांक का स्वागतः**

प्रवेश का अर्थ है स्वागत था आरम्भ। कॉलेज की पहली पत्रिका में विद्यार्थियों का स्वागत है। यह वह प्रवेश द्वार है यहाँ से विद्यार्थियों को सोचने का अवसर प्राप्त होता है।

2. **पत्रिका के उद्देश्यः–**

पत्रिका के उद्देश्य यह है कि सभी विद्यार्थियों को चिंतन करने का अवसर मिले। यहाँ तक सम्भव हो सके। रचना/विषय स्वरचित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों की सोचने की क्षमता का विकास हो। पत्रिका का यही उद्देश्य होता है।

3. **सृजनशीलताः–**

सृजनशील का अर्थ है सृजन करना अर्थात् जो भी रचना विद्यार्थी पत्रिका में छपवाना चाहता है उसका सृजन वह स्वंय करें, न कि किसी अन्य की रचना को पत्रिका में छाप दें।

4. **पत्रिका एक मंचः–**

पत्रिका एक मंच है जिसके माध्यम से किसी भी विद्यार्थी को अपने विचार, अपनी योजना अपने सुझाव, अर्थात् अपने सिद्वांतों को पत्रिका में प्रकाशित करने का अवसर मिलता है। पत्रिका वह माध्यम बन जाती है जिससे उनके सुझाव अन्य विद्यार्थियों तक पहुँच जाते है। और विद्यार्थियों को पत्रिका के मंच को प्रयोग करने का अवसर मिल जाता है।

5. **पत्रिका में रचनाओं की अपेक्षाः–**

पत्रिका में रचना की अपेक्षा सदा यही रहती है कि जब भी पत्रिका में किसी रचना का उल्लेख किया जाता है तो इसमें विद्यार्थी द्वारा स्वरचित कविता/रचना हो जिससे पत्रिका मं कुछ नयापन हो। सभी विद्यार्थियों से यही अपेक्षा की जाती है कि वह किसी अन्य की रचना का प्रकाशन अपनी पत्रिका में न, करें।

6. **मन भावनाओं का विश्लेषण होः–**

पत्रिका ऐसी होने चाहिए जिसमें विद्यार्थी के मन की भावनाएं हो और पत्रिका के माध्यम से वह शब्दों से पत्रिका में जुड़ जाए। जिससे उसके मन की भावनाओं का विश्लेषण होगा और वह एक प्रस्तुति के रूप में बाहर आ जाएगी।

धन्यवाद

अर्पणा मन्हास
बी॰ए॰तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक : 104

# • अजीब सी है ये जिन्दगी.....

ना जाने क्यूँ अजीब सी है ये जिन्दगी.....
एक पल में है कोई
तो दूसरे पल में कोई नहीं,
मै तो हूँ यहाँ.....
पर मेरा मन है कही और
ना जाने क्यूँ अजीब सी है
ये जिन्दगी.....
एक पल कुछ गँवाया तो
दूसरे ही पल कुछ नया पाया
कभी कोई रूठा हमसे तो
कभी किसी ने हमें मनाया
कभी जिन्दगी ने हमें रूलाया तो
कभी इसने हमें हंसाया
ना जाने क्यूँ अजीव सी है
ये जिन्दगी.....
बहुत से रिश्ते दिए इसने
माँ की ममता पिता का प्यार
दादी की कहानी तो दादा का दुलार
किसी ने अपनाया तो
किसी ने झटके से माथा छुड़ाया
ना जाने क्यूँ अजीव सी है
ये जिन्दगी.....
एक पल में है कोई और
दूसरे पल में कोई नहीं,
कभी किसी परीक्षा में फेल तो कभी
किसी परीक्षा में पास कराया
पर हर एक परीक्षा से कुछ
नया सिखाया इसने
ना जाने क्यूँ अजीब सी है
ये जिन्दगी.....

सपना मन्हास
बी॰ए॰ द्वितीय सैमेस्टर
रोल नं. 16601

# मेरे आदरणीय माता – पिता

माता–पिता से बढ़के जग में,
है कोई भगवान नहीं।
माता–पिता की सेवा से बढ़कर,
जग में कुछ काम नहीं।
माता–पिता को जो दुःख देता है
तो पाता सम्मान नहीं।
माता–पिता का करे अनादर
वो पापी है, इन्सान नहीं,

नेहा जम्वाल
कक्षा: बी॰ए॰ चतुर्थ सैमेस्टर
रोल नं. 416

# दूसरों के लिए जीना सीखो

अपने लिए तो सभी जीते है।
मगर दूसरों के लिए कोई नहीं जिया करता।
अपनेसुख की अरदास सभी करते है।
मगर दूसरों के लिए कोई नहीं करता।
अपने दुःख तो सभी सुनाते हैं।
मगर दूसरों के दुःख कोई नहीं सुनता।

ये दुनिया है मतलब की,
जहां कोई किसी का नहीं बनता
कभी दूसरी की सुन कर देखो।
इससे ज्यादा सुख नहीं मिलता।

कल्पना ठाकुर
कक्षा–बी॰काम
रोल नं. 16192

# मेरे कॉलेज

मेरे कॉलेज मुझे भूल न जाना
तू जब बना था
उम्र के लिहाज से तू छोटा मैं बड़ी थी
महज तीन सालो में तूने
कुलांचे भर ली
तेरे होते मैंने भी अपनी डिग्री पूरी कर ली।
उठ स्कूल से तूने वनतुंगली में जाकर
ऊँची–ऊँची इमारतें खड़ी कर लीं
यह भवन, अट्टालिकाएं अब तेरी पहचान है।
ज्ञान के स्रोत में तू इलाके की पहचान है
बड़ा होकर भी तू पाठ सब्र,
संयम व ज्ञान का पढ़ाएगा
क्षेत्र की हर संतति को,
अपने लाड से आगे बढ़ाएगा
तेरे प्रांगण में बराबरी का गान होगा
कौन अमीर गरीब, कौन ऊँच नीच
तनिक न इसका तुझे ज्ञान होगा
ज्ञान होगा तो आगे बढ़ने का
बाधाओं व जाति बन्धन से लड़ने का
तीन सालों में तूने जो उपकार किए
मरे ज्ञान के नेत्रों के जो उपचार किए
इस सबके लिए तेरी आभारी हूँ
आंचल में तेरे पली, मैं बेटी तेरी प्यारी हूँ
वापस जब जब ससुराल से पीहर आऊंगी
तेरी महिमा, तेरे किस्से जरूर सुनाऊंगी।

इन्दु धीमान
बी॰ए॰तृतीय
छठा सैमेस्टर

# कुदरत

हर शख्स इस शहर में परेशान सा हैं
इन मकानों में उसका मकान कौन सा हैं!

ये रास्ते जो इस शहर से दूर ले जाते हैं।
वो भी तो उसे किसी और शहर में छोड़ आते हैं।

पूछते हैं ये पंछी किसी बेघर फरिश्ते की तरह
इस जमीन पर कुदरत का निशान कौन सा है!

वो तो शुक्र है इतनी ऊँचाई तक इन्सान के हाथ नहीं पहुंचते हैं।
वरना खुदा भी पूछता मेरा आसमान कौन सा है।

मैंने तो बनाई थी ये दुनिया पानी, मिट्टी, पत्थर और हवाओं से,
ये क्रंकीट, कारखानों और काले धुंए का कब्रिस्तान कौन सा है।

'निशा' अपनी खिड़की में बैठी–बैठी अकसर ये सोचती है,
इन मकानों के बीच ये अकेला पेड़ कौन सा है।

निशा कटोच
कक्षा–बी॰ए॰ चतुर्थ सैमेस्टर, रोल नं. 520

# "स्वर्ग की सीढ़ियाँ"

जिंदगी में कुछ करना चाहते हो।
तो माता–पिता तथा गुरूओं का आदर–सत्कार करो।
जिंदगी में कुछ लेना चाहते हो तो माता–पिता से लो।
कहीं जाना चाहते हो तो,
सत्संग में जाओ
कुछ देना चाहते हो तो
भूखे को खाना देना
यह सब कार्य करने से जो "हमें स्वर्ग की सीढ़िया प्राप्त होगी"

अखिल कुमार
बी॰ए॰ चतुर्थ सैमेस्टर
रोल नं. 530

# सफलता के सात भेद

मुझे अपने कमरे के अंदर ही उत्तर मिल गए।

| | |
|---|---|
| छत ने कहा | ऊँचे उद्देश्य रखो। |
| पंखे ने कहा | ठण्डे रहो |
| घडी ने कहा | हर मिनट कीमती है। |
| शीशे ने कहा | कुछ करने से पहले अपने अंदर झांक लो। |
| खिड़की ने कहा | दुनिया को देखो। |
| कैलेंडर ने कहा | अप–टू–डेट रहो |
| दरवाजे ने कहा | अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरा जोर लगाओ। |

अर्चना
कक्षा– बी॰ए॰ चतुर्थ
रोल नं. 803

# मनुष्य

प्रार्थना करते समय समझता है।
कि भगवान सब सुन रहा है,
पर निंदा करते हुए ये भूल जाता है।
पुण्य करते समय ये समझता है।
कि भगवान सब देख रहा है।
पर पाप करते समय ये भूल जाता है।
दान करते हुए ये समझता है।
कि भगवान सबमें बसता है,
पर चोरी करते हुए ये भूल जाता है।
प्रेम करते हुए यह समझता है।
कि यह दुनिया भगवान ने बनाई है,
यह नफरत करते हुए ये भूल जाता है।
और फिर भी मनुष्य
अपने को बुद्धिमान समझता है।

मीनाक्षी गुलेरिया
कक्षा–बी॰ए॰ चतुर्थ सैमेस्टर,
रोल नं. 805

# दोस्ती की यादें

कुछ सालों बाद यह लम्हे बहुत याद आएगें
जब हम सब दोस्त अपने–अपने मुकाम पर पहुँच जाएंगे।
अकेले जब भी होगें, साथ गुजरे हुए लम्हें याद आएगें।
पैसे तो बहुत होंगे, पर खर्च करने के लिए लम्हे कम पड जाएँगे।
आज जो ज्यादा मैसेज आने पर गुस्सा करते है।
कल एक–एक मैसेज के लिए तरस जाएंगे।
कुछ बातें फिर याद दोस्तों की दिलाएगी
फिर वह बातें सोचते–सोचने आँखें फिर से नम हो जाएगी।
इन पलों को मिल कर दिल खोल कर जी लो दोस्तो।
''क्योंकि यह जिन्दगी इन पलों को बार–बार नही दोहराएगी''

अर्पणा मन्हास
बी॰ए॰ तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक 104

# हमारे शरीर के कुछ रोचक तथ्य

1. औसतन हर मनुष्य अपने जीवन का एक साल इधर–उधर रखी हुई चीजों की ढूंढने में लगा देता है।
2. छींकते समय आंखे खुली रख पाना नामुमकिन है और छींकते समय दिल की गति एक मिली सेकण्ड के लिए रूक जाती है।
3. अगर आप जोर से छींकते है तो आप अपनी पसली तुड़वा सकते है।
4. सिर्फ एक घण्टा हैडफोन लगाने से हमारे कानों की जीवाणुओं की तादाद 700 गुणा बढ़ जाती है।
5. अगर आप अपना सिर एक दीवार से लगाकर दबाव लगाए तो आप एक घण्टे में अपनी 150 कैलोरी खर्च करते है।
6. मानव दांत चट्टानों जितने कठोर होते हैं।
7. जागते समय हमारा दिमाग 10 से 24 वाट तक की ऊर्जा छोड़ता है जो एक बिजली के बल्ब को चला सकता है।
8. हर बार जब हम कुछ नया सीखते है तो दिमाग से नई झुरियां विकसित होती है और यह झुर्रियां ही आई क्यू का सही पैमाना है।
9. मनोविज्ञान के अनुसार जिस इंसान के दिमाग की जितनी ज्यादा झुर्रियां होती है वो इंसान उतना ही ज्यादा समझदार होता है।
10. चीनी की जब चोट पर लगाया जाता है तो दर्द तुरंत कम हो जाता है।
11. अगर कोई आप की तरफ घूर रहा है तो आपको तुरंत इसका एहसास हो जाता है चाहे नींद में ही क्यों न हो।

अरविन्द गुलेरिया
बी॰कॉम चतुर्थ सैमेस्टर

# हार में भी जीत का एहसास

राहुल अपने दादा जी के साथ नदी किनारे टहल रहा था। इतने में दादा जी के फोन पर एक काल आ गई। राहुल ने वही सड़क पर पड़े कुछ छोटे–छोटे पत्थर उठाए और नदी की सतह पर उन्हें उछालने की कोशिश करने लगा। उसे पता था कि अगर पत्थर स्पिन करेगा, तभी वह कई छलांगे लेकर नदी के उस पार निकल पाएगा, नहीं तो वह पहली बार में ही पानी में डूब जाएगा। राहुल के दादा जी एक नामी क्रिकेटर थे। उनका नाम अच्छे स्पिनरों में लिया जाता था। पूरी शाम राहुल नदी के किनारे पत्थर को स्पिन करने की कोशिश में लगा रहा। लेकिन उससे यह नहीं हो पा रहा था। कुछ देर में दादा जी वापस लौटे और शाबाशी देते हुए बोले बहुत अच्छा बेटा। तुम कर लोगे। बस इसी तरह प्रयास करते रहो। राहुल बोला दादा जी मुझसे कुछ नहीं होता। सब मुझसे बेहतर प्रदर्शन करते हैं। पर मैं हमेशा हार जाता हूँ दादा जी बोले मेरी एक सलाह मानोगे? राहुल बोला आप जो भी कहेंगे वह मैं मानूंगा। राहुल बोला आप ही मेरे आदर्श हैं। दादा जी बोले पहली बात तो यह कि कोई और तुमसे बेहतर है यह सिफ तुम जानते हो, वह नहीं। इसे अपनी ताकत बनाओ। और कोई भी काम करो, तो पूरे मन से, पूरी लगन से करो, और ऐसे करो कि उसे करने में तुम्हें मजा आए। तुम्हारी असली जीत उस काम को मजे से करने में ही हैं। नहीं तो जीत भी गए तो क्या?

इस बात को कई साल जीत गए। राहुल न केवल एक अच्छा स्पिनर बन गया, बल्कि रणजी टीम

में उसका चयन भी हो गया। रणजी ट्राफी का फाइनल मैच था और आखिरी ओवर में जीतने के लिए सामने वाली टीम को केवल सात रन बनाने थे। राहुल के सामने एक बेहतरीन रिकार्ड वाला बल्लेबाज खडा था। राहुल को दादा जी की बात याद आई। कोई और तुमसे बेहतर है यह सिर्फ तुम जानते हो, वह नहीं, राहुल ने अपनी पूरी जान लगा दी। उसने तय कर लिया था कि जीते या हारे। वह कुछ ऐसा करेगा कि न केवल उसे, बल्कि पूरे स्टेडियम को मजा आए। राहुल ने पहली बाल पर एक, दूसरी पर शून्य, तीसरी पर एक, चौथी पर एक ओर पांचवीं पर शून्य रन दिए। आखिरी बाल पर बल्लेबाज ने चौका मारकर मैच जीत लिया। मैच खत्म हुआ लेकिन राहुल के चेहरे को लग रहा था, जैसे वह मैच जीतकर आया हो। दादा जी ने राहुल को देखा, में कहता था न, तुम एक दिन जीत जाओं। राहुल हंसते हुए बोला, जो दादी जी। मुझे अब असली जीत का एहसास हो गया है।

जीत सिर्फ वह नहीं, जो दूसरों को हराकर हासिल की जाए।

दिव्या भारती
बी.ए. छठा सैमेस्टर

# कॉलेज के आखिरी दिन

राह देखी थी इस दिन की कब से,
आग से सपने सजा रखे थे, न जाने कब से,
बहुत उताबले थे यहां से जाने को,
जिन्दगी का अगला पड़ाव पाने को,
पर ना जाने क्यों, दिल में आज कुछ और आता है,
इस वक्त रोकने को जी चाहता हैं
जिन बातों को लेकर रोते थे
आज उन पर हंसी आती है।
ना जाने क्यों आज उन पलों को याद बहुत आती है।
कहा करते थे बड़ी मुश्किल से तीन साल सहे जाएगें
पर आज क्यों लगता है कि कुछ पीछे रह गया।
न भुलने वाली कुछ बाते रह गई
यादें जो जब जाने का सहारा बन गई
मेरी टाँग अब कौन खिंचा करेंगा।
मुझे परेशान करने के लिए कौन मेरा पीछा करेगा।
जहाँ 2000 का हिसाब नही अब
कौन फिर 2 रूपये के लिए लड़ेगा,
कौन रात भर साथ जग कर पढ़ेगा
कौन मेरे नए–नए नाम बनाएगा
मैं अब बिना मतलब किस से लडूंगा।
बिना दीपक के किस से फालतु बात करूगाँ।
कौन फेल होने पर दिलासा दिलाएगा।
कौन गलती से नम्बर आने पर गालियां सुनाएगा।
ऐसे दोस्त कहां मिलेंगे
जो खाई में भी धक्का दे आएगें।
फिर तुम्हें बचाने खुद ही आऐंगे।
मेरे गानों से परेशान कौन होगा,
कभी मुझे किसी लड़की से
बात करते देख हैरान कौन होगा।
कौन कहेगा साले तेरे जोक पर हंसी नहीं आती
कौन पीछे से बुलाकर कहेगा आगे देख भाई.....
अचानक बिन मतलब किसी को भी देख कर
पागलों की तरह हंसना
ना–जाने यह फिर कब होगा।
दोस्तों के लिए परोफेसर से कब कौन लडेगा।
क्या हम यह फिर कब कर पाऐगें।
कौन मुझे मेरे काबीलियत पर भरोसा दिलाएगा।
और फिर ज्यादा हवा में
उड़ने पर जमीन पर लाएगा।
मेरी खुशी में सच में खुश कोन होगा।
मेरे गम में मुझ से ज्यादा दुःखी कौन होगा।
कह दो दोस्तों ये दोबारा कब होगा???

रमन गुलेरिया
रोल नं. 138
स्नातक–तृतीय वर्ष

# जिन्दगी का लोकतंत्र

लोगों का लोगो के लिए लोगों का है लोकतंत्र
कहकर तुम यह भूल गए,
सीटी ताली हमने मारी और हीरो यूं तुम बन गए।
वोट ओर शौहरत हमसे पाई कुर्सी पर बैठ के भूल गए,
जो अब भी भूखे सोते कैसे उनको भूल गए।
नंगे पांव जो चलते हैं, तपती धूप को सहते होंगें।
जिनके पेट–पीठ से मिलते है, वो भी क्या कहते होंगे।
थ्रीजी, फोर जी का युग आज है और यह लोग है
बसते कहां,उनके हिस्से का अमन भी यू ही तुमने छीन लिया।
और चलते–चलते लोगों से, बच्चों ने चलना सीख लिया।
सहारा देने कोई नहीं आया, बस यूं ही लडखड़ाना सीख लिया।
कविताओं को पढ़ते–पढ़ते, हमने भी लिखना सीख लिया।

शिखा पठानिया
बी.ए.चतुर्थ सत्र
रोल नं. 414

# "ख्याल रखना"

कभी गुम ना हो रिश्तों की खूशबु,
यह ख्याल रखना.....
दौलत है यह सबसे बड़ी,
इसको संम्भाले रखना.....
खुशकिस्मत होते हैं वो होते है जिनके,
खुशिया और आंसू सांझे,
ना हो वक्त तो भी तुम वक्त निकाले रखना.....
रिशता नहीं हैऐसा कोई आज,
दिखता है जो ऐसा.....
तुझको अगर मिला है तुम इसे,
आंखों में पाले रखना.....
खुदा ना करे की ना आए कभी वक्त ऐसा,
पर उस वक्त भी "निशू" के गले में बाहें डाले रखना।

निशान्त चौधरी (निशू)
बी.ए.चौथा समेस्टर

# "मधुर वचन"

दूसरों की गलती को सहन करना एक बात है,
परन्तु उन्हें माफ कर देना और भी महान बात है।
जो कार्य हाथ में लें, वह निश्चय से करो,
तो सफलता अवश्य मिलती है।
स्वंय का बचाब करने के लिए कभी दूसरों पर
दोषारोपण मत करो,
क्योंकि समय के पास सत्य को
प्रकट करने का अपना तरीका है।
खुशी से बढ़कर पौष्टिक
खुराक और कोई नहीं हैं,
दूसरों को खुशी देना
सबसे बड़ा पुण्य का काम है।
जो सदा सन्तुष्ट है,
वही सदा हर्षित एवं आर्कषणमूर्त है।
कर्म आपको आत्म अनुभव कराता है।
बहुत अधिक आराम स्वंय दर्द बन जाता है।

शीतल शर्मा

# सफलता

सफलता की शुरूआत ऐसी होनी चाहिए,
खुशी हो या गम होठों पर मुस्कान होनी चाहिए
हौंसले बुलंद और सपनों में जान होनी चाहिए
सामने आ जाए कितनी भी मुश्किलें पर
दिल मे सफलता की चाह होनी चाहिए,
सफलता के लिए जज्बां जुनून और
जोश तीनों का साथ होना चाहिए।

आरजू देवी
रोल नं. 301
बी॰काम. छठा सैमेस्टर

## उस पल का इन्तजार

दिल मेरा रोने को करता है।
परन्तु दुनिया का दर्द देखकर रो नहीं पाता
चला हूँ इस दुनिया को बदलने
परन्तु खुद को भी नहीं बदल पा रहा हूँ
जिन्दगी के अनुभव कम है
परन्तु इरादों में मेरी एक हौंसला है
आज कुछ करने चला हूँ।
परन्तु इस जहां की करवटें बदलना मुश्किल है।
कभी सोच कर थक जाता हूँ
तो कभी थककर सोचता हूँ
आज की जिन्दगी के मायने बदल रहें है।
तो कुछ लोगों के आयने बदल रहे हैं
सिलसिलों का नजरिया बदल रहा है।
या मेरी तकदीर
सोचता हूँ की तेरे बिन थे जिन्दगी कुछ नहीं है।
पर मैं तो तुझे जानता भी नहीं
सिर्फ सुना है तेरे बारे में की तू कहीं है
हाथों की तकदीर तेरे नाम कर दी है
जन्नत भी मिल गई तो क्या हुआ
चाहत तो है फिर भी तुझे पाने की

यशु
बी॰ए॰ द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक–644

# बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था.....
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था.....
खबर ना थी कुछसुबहा की,
ना शाम का ठिकाना था.....
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था.....
माँ की कहानी थीं।
परीयों का फसाना था.....
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था.....

मोनिका जम्बाल
कक्षा–बी॰ए॰ चतुर्थ सैमेस्टर,
रोल नं. 413

## लम्हों की जिन्दगी

आज के लम्हे चाहे कितने ही कठिन हो
उन्हें खुश होकर जीना चाहिए।
क्योंकि बीते लम्हे चाहे कितने ही दुखदायी रहे हो
हम आज उनको याद करते है और फिर से
उन लम्हों को जीना चाहते है।
क्योंकि वो लम्हें आज हमारे पास नहीं है।
हमें वे दुबारा जीने को नहीं मिल सकते
इसलिए हम उन लम्हों को पाना चाहते है
जो लम्हे आने वाले है, हमने जीने है
हम उन्हें कभी भी महत्व नहीं देते।
क्योंकि हम हमेशा बीते लम्हों को याद करके जीते है।
हम यह कभी भी नहीं सोचते की ये आने वाले लम्हे
जिन्हें अभी हम महत्वहीन समझ रहे है।
कुछ समय बाद ये भी बीते वही लम्हें बन जाएगें।
जिन्हें हम आज पाना चाहते हैं।
फर्क सिर्फ इतना है कि वे लम्हें
हम कल पाना चाहेगें।
और कुछ लम्हें आज पाना चाहते है।

यशपाल शर्मा
बी॰ए॰द्वितीय वर्ष

# अनमोल वचन

1. हर व्यक्ति एक किताब है बशर्ते तुम पढ़ना जानते हो। (सुकरात)
2. माँ का गुस्सा एक हीरे की चमक के समान है, जो केवल चमकाता है, (टैगोर)
3. हमारी सफलता हमारी शक्ति पर निर्भर करती है। (एम.जी.)
4. समय पड़ने पर साहस ही हमारे काम आता है। (संस्कार)
5. निर्णय जल्दी कीजिए पर देर तक सोचने के बाद। (वनडिशा)
6. जब हम गिरते है तो अच्छी तरह चलने का रहस्य सीख जाते है। (अरविन्द)
7. प्रकृति जब कठिनाईयां बढ़ाती है तो बुद्धि भी बढ़ाती है। (इमर्सन)

## महान लोगों के विचार

हाथ अपना वह दिखाते फिरते है,
जिन्हें अपनी तकदीर पर शक है।
गुलशन मैदान

हर रिशता प्यार से बनता है,
खून तो धड़कनों का साथी है।

बस जायके में थोड़ा कड़वा है।
वर्ना सच का कोई जबाब नहीं।

गुण न हो तो व्यक्ति का रूप व्यर्थ है।
विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है।

उपयोग न आए तो धन व्यर्थ है
साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है।

भूख न हो तो, भोजन व्यर्थ है,
होश न हो तो जोश व्यर्थ है।

परोपकार न हो तो जीवन ही व्यर्थ है।

## जीवन

मेरा जीवन है– समुद्र की लहरों की तरफ,
रात के पहरो की तरह,
और अपनों में गैरों की तरह– मेरा जीवन है।

मेरा जीवन है– रात के सितारों की तरह,
रूठे हुए मजारों की तरह और
पतझड़ में बहारों की तरह–मेरा जीवन है।

मेरा जीवन है– आग में घास की तरह
मरू में प्यास की तरह और
कविता में परिहास की तरह–मेरा जीवन है।

मेरा जीवन है– जिन्दगी में हादसे की तरह
पानी में प्याले की तरह और
शतरंज में पासे की तरह–मेरा जीवन है।

सुनीता
कक्षा–बी.ए. द्वितीय सैमेस्टर
रोल नं. 16606

# नगरोटा सूरियॉ कालेज की विकास यात्रा

1 मार्च 2013 में माननीय मुख्यमंन्त्री श्री वीरभद्र सिंह द्वारा ज्वाली रैली में नगरोटा सूरियां में कालेज खोलने की घोषणा की।

2 15 जनवरी 2014 को कालेज की प्रदेश सरकार द्वारा अधिसूचना, साथ में 5 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।

3 11 जून 2014 को स्थानीय सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के परिसर में प्रवेश आरम्भ।

4 21 जून 2014 को बी०ए० प्रथम वर्ष की विधिवत कक्षाओं का आरम्भ।

5 अन्तिम तिथि तक प्रथम सत्र (बी०ए) में 113 बच्चों का प्रवेश जिसमें अधिकांश लडकियां ।

6 पी०टी०ए० प्रधान सतपाल मेहरा व सदस्य रक्षपाल धीमान् के नेतृत्व में रु 38310 की आम जनता से उगराही कर स्कूल के सांईस भवन को वैठने के काविल बनाया।

7 स्थानीय व्यवसायी श्री मेहर सिंह पठानियां द्वारा कालेज की नाम पट्टिका कालेज को दान दी। श्री पवन कुमार, मालिक एम०पी० फिलिग स्टेशन ने रु 5000 व श्री के सी शर्मा ने रु 1100 दान दिए। प्राचार्य अशोक अवस्थी ने 1000 रूपये व अभिभावक वी.के. पटियाल ने 1000 रूपये दान दिये।

8 जुलाई 2014 में श्री नीरज भारती माननीय मुख्य संसदीय सचिव (शिक्षा) का कालेज में आगमन, उनके द्वारा पुस्तकालय हेतु एक लाख रुपये का अनुदान दिया।

9 सरकार द्वारा 8,26,225 रूपयों की ग्रांट उपलब्ध करवाई गई जिससे कार्यालय के कम्पयूटर, फर्नीचर व विधाथियों के लिए डैस्क, बलैक वोर्ड व अन्य फर्नीचर खरीदे गए, जिसमें प्लास्टिक की कुर्सियां भी शामिल हैं।

10 सितम्बर 2014 में कामर्स संकाय की शुरुआत 09 वच्चौ की फैकल्टी चेंज कर की गई, 18 वच्चों को अन्य क्षेत्रों से माइग्रेट किया गया।

11 सरकार द्वारा जमीन अधिग्रहण व कालेज की अन्य सुविधाओं हेतु नवम्बर 2014 में 25 लाख रुपये उपलब्ध करवाए गये।

12 अक्तूवर 2014 बनतुंगली में कालेज के भवन निर्माण हेतु 50 कनाल सरकारी भूमि का अधिग्रहण की प्रकिया शुरु की गई।

13 नवम्बर 2014 में 50 कनाल सरकारी भूमि के अधिग्रहण प्रकिया के साथ बनतुंगली में ही 110 कनाल वन भूमि के अधिग्रहण के लिए वन विभाग को आवेदन किया गया जिसके अधिग्रहण की आधी प्रकिया पूर्ण हो चुकी है। कालेज की भावी आवश्यकताओं के मद्देनजर यह भूमि आवेदित की गई है।

14 17 फरवरी 2015 को बनतुंगली में माननीय मुख्यमंन्त्री श्री वीरभद्र सिंह द्वारा कालेज भवन का शिलान्यास किया गया जिसमें श्री नीरज भारती माननीय मुख्य संसदीय सचिव व पूर्व सांसद श्री चन्द्र कुमार भी उपस्थित थे।

15 18 मार्च 2015 मुख्यमंन्त्री के आदेश पर कालेज में अर्थशास्त्र के प्रवक्ता पद का सृजन।

16 दिसम्बर 2015 में वी॰वी॰ए॰, व वी॰सी॰ए॰कोर्सो के लिए आवेदन, जो भवन के अभाव में स्वीकृति की प्रकिया अधीन है।

17 श्री नीरज भारती माननीय मुख्य संसदीय सचिव के निर्देश पर कालेज में 21–8–2015 को संस्कृत के आचार्य के पद का सृजन।

18 28 जुलाई 2015 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय दूरवर्ती मुक्त विश्वविधालय का अध्ययन केन्द्र खोलने हेतु एच॰आर॰ एम॰ डी॰ व क्षेत्रीय निदेशक शिमला को प्रपोजल भेजा जो स्वीकृति के अधीन है।

19 दिसम्बर 2015 में अंग्रेजी प्रवक्ता के पद का सृजन।

20 5,92,935 के नये डैस्क जुलाई 2016 में खरीदे गये व प्लास्टिक की कुर्सियां खरीदीं।

21 4,33,776 रुपये से वर्तमान भवन का पी डब्लयू डी के माध्यम से मुरम्मत का कार्य करवाया गया, जो अभी अधूरा है।

22 जुलाई 2016 का प्व्क्म्प्रध्प्राईवेट विधार्थियों के लिए परीक्षा केन्द्र की व्यवस्था।

23 19 सितम्बर 2016 को थ्प्तम म्गजपदहनपीमतका सामान खरीदा गया।

24 जनवरी 2017 में 34000 रुपये में कालेज के लिए अपना सांउड सिस्टम खरीदा गया।

25 अभिभावक–अध्यापक संघ द्वारा इस आशय का प्रस्ताव पारित कर केन्द्रीय सरकार को भेजा कि यह महाविधालय पौंग विस्थापितों की संतति का शैक्षिक पोशण कर रहा है। अतः च्मतपचीमतपंस क्मअमसवचउमदज च्संद के अन्तर्गत विकास में सहयोग दिया जाए।

26 केन्द्रीय मंत्रालय के निर्देशानुसार 24 जून 2017 को बी॰बी॰एम॰बी॰ के दो अधिकारियों ने कालेज परिसर का निरीक्षण कर पी०टी०ए० से भेंट की व मांग का अनुमोदन कर प्रस्ताव प्रेषित करने की सलाह दी।

27 08 अगस्त 2017 को कालेज परिसर में विधार्थियों की सुविधा के लिए बहुउदेशीय भवन व आडिटोरियम के प्रस्ताव की ड्राइंग बनवाकर मुख्य अभियन्ता भाखड़ा व्यास डैम परियोजना, तलवाड़ा को भेजा जिसकी अनुमानित लागत 4 करोड़ रुपये है। इसकी प्रति अध्यक्ष, वी॰ वी॰ एम॰ वी॰,चण्डीगढ को भी भेजी।

28 वर्ष 2014–15, 2015–16 व 2016–17 में विभिन्न श्रेणियों के अर्न्तगत रु 308062/– की छात्रवृतियां बच्चों को वितरित हुई जिसमें वर्ष 2015–16 व 2016–17 की कुछ छात्रवृतियों का वितरण बाकी है।

29 नवम्वर 2016 में कालेज में सांईस कक्षाओं का प्रस्ताव सरकार को श्री नीरज भारती, माननीय मुख्य संसदीय सचिव (शिक्षा) के माध्यम से प्रेषित किया।

30 24 जून 2017 को सरकार ने कालेज में विज्ञान विषयों को शुरु करने की अधिसूचना जारी कर दी जिसमें मैडिकल व नान मैडिकल दोनों का प्रावधान है।

31 सितम्बर 2014 में कालेज में एन॰एस॰एस यूनिट खोलने का प्रस्ताव हि॰ प्र॰ विश्वविधालय को भेजा था, जिसकी स्वीकृति सितम्बर 2016 में मिली।

32 कालेज में अंग्रेजी प्रवक्ता के दो पदो का सृजन।

33 जून 2017 में अंग्रजी प्रवक्ता के एक और पद का सृजन। कालेज में म्यूजिक (वोकल) के प्रवक्ता पद का सृजन व तबला वादक के पद का सृजन।

34 जून 2017 में सांईस विषय में भौतिक, गणित, जीव विज्ञान, रसायन शास्त्र व वनस्पति विज्ञान के पांच पदों का सृजन।

35 यू जी सी के अधिनियम 1956 के तहत कालेज को 2 F (12B) के तहत लाने हेतु यू जी सी को आवेदन, ताकि यू जी सी से सीधे अनुदान मिल सके।

36 इको क्लब व रैड रिबन की स्थापना।

37 जुलाई 2017 रोवर एण्ड रेंजर यूनिट के लिए आवेदन।

# Haldoon

# ENGLISH SECTION

Session *2016-17*

**Staff Editor**
Prof. Nishant

**Student Editor**
Deeksha Samkaria
Monika Thakur

# Student Editorial

Dear friends

I feel immensely proud in presenting this issue of the English Section of "Haldoon" the prestigious college magazine. Magazine is a medium which encourages students to highlight their hidden talent. It also provides a platform to the students to express their inner views openly and independently. The overall development of the personality of a student depends upon his or her skills and this magazine helps to enhance the skill of writing. This edition of magazine also helps the students to develop self confidence among themselves.

The college magazine "Haldoon' is full of interesting and informative articles. I pay my sincere thanks to the staff Editor (English Section) "Mr. Nishant" for his support and guidance.

"Happy Reading"

Deeksha Samkaria
B.A. (IV th Sem. ) 802

# 10 TYPES OF PURIFICATION

1. Body gets purified by .....Water and Exercise
2. Breath gets purified by.....Pranaayam (Yoga)
3. Mind gets purified by .....Silence of thoughts
4. Intellect gets purified by .....Spiritual knowledge
5. Memory gets purified by.....Manan and Chintan
6. Ego gets purified by.....Seva (Service)
7. Self gets purified by.....Maditation
8. Food gets purified by .....Positive thoughts while cooking and eating
9. Wealth gets purified by.....Giving/Donating
10. Feelings gets purified by .....Spiritual love

Nothing is impossible in this world, Even impossible itself said that I'm possible.

**Y.P. Sharma**
B.A. 4th Semester

---

# "VALUE OF TIME"

To realize the value of one year, ask the student who failed in the examination.
To realize the value of month
Ask the mother who has given birth to a premature baby.
To realize the value of one week.
Ask the editor of a weekly newspaper.
To realize the value of hour
Ask the lover who waiting to meet the beloved
To realize the value of minute.
Ask the person who has missed the train.
To realize the value of a second.
Ask the person who has just escaped from an accident.
To realize the value of milli second.
Ask the person, who won the silver medal in the Olympic
Remember that time waits for no one.

**Nisha Katoch**
B.a. 4th Semeser
Roll No. 520

# "WHAT IS LIFE"

Life is an examination
god is a great examiner.
We are all students
All are sitting in the examination hall
This life is an answer book
On which we have to take exam.
The time allowed is three hours
first bell rings in "childhood"
Second in "Youth"
The third in "old-age"
And bell of last hour is rung by the God's messenger
The exam is over as time is over
The answer book is snatched as life meets its end.

| | | |
|---|---|---|
| Life is a challenge | - | "Meet it" |
| Life is a struggle | - | "Accept it" |
| Life is a tragedy | - | "Face it" |
| Life is a love | - | "Love it" |
| Life is a duty | - | "Perform it" |
| Life is a game | - | "Play it" |
| Life is a song | - | "Sing it" |

**Shilpa**
B.A. 4th Semester
Roll No. 705

---

# "RAGGING"

India is badly affected by ragging, a form of abuse on new corners to educational institutions. The increasing privatisation of higher education has led the academic institutions in India to experience an increasing number of ragging related incidents. A report from 2007 highlights 42 incidents of physical injury and reports of deaths due to ragging can be seen as a result. Ragging has reportedly caused atleast 38-39 deaths in the last seven years. I would like to say one thing the government has taken steps against ragging and should further be checked.

**Sarika Choudhary**
B.A. 6th Semester
Roll No. 106

## "THREE THINGS"

Three things to admire
Nature, Beauty, Music
Three things to avoid
Smoking, Drinking, Gambling
Three things to govern
Temple, Tongue, Action
Three things to watch
Habit, Behaviour, Culture
Three things to remember
Parents, Teachers, Friends
Three things to leave
Corruption, Terrorism, Pessimism.

**Prianka Patial**
B.A. 4th Semester

## WHY MOURN THE BIRTH OF A GIRL?

Why do people mourn
When a girl is born?
After all she is a vital part of society
Created by the same almightly
In today's world.....
A woman is not less than a man
She can do everything that man can
It is the girl who helps the mother.
In tasks like cooking, washing and others
It is sad without a woman
Man is incomplete
Therefore, for Adam, God sent Eve.
So girl should not be considered a curse.
As they too are a vital part of the universe.

**Shivani**
B..com. 4th Semster I No. 1050

# "DO WE KNOW ACTUAL FULL FORMS"

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1) | Newspaper | : | North East West South past and present events report |
| 2) | Chess | : | Chariot, Horse, Elephant, Soldiers |
| 3) | Joke | : | Joy of kids Entertainment |
| 4) | Cold | : | Chronic obstructive lung Disease |
| 5) | Aim | : | Ambition in mind |
| 6) | Eat | : | Energy and taste |
| 7) | Tea | : | Taste and Energy Admitted |
| 8) | Smile | : | Sweet memories in lips expression. |

**Vishal Rana**
B.A. 4th Semester
Roll No. 633

# "COLLEGE LIFE"

I didn't know the happiest moments of my life
Happened during my college life.
Which made me realise
a lot things about my school life.
At first I thought, it would be just normal life
and didn't expect anything happened in disguise.
I thought I will continue to hide my beehive
But it seems that the happenings made me alive
So I thank these people who made my college life complete.
The friends who I can say, bring out the real me
The family which completes my family tree
And the teachers who saw the best in me
College life was lot of fun.
Though problems come fast as the cheetah runs.
But its what motivates me to do the best I can.
And brought me to the end of my college life.

**Shaweta Dhiman**
B.A. 2nd Semester
Roll No. 16332

## MANTRAS OF LIFE

Mirror - Will never let you lie
Knowledge - Will never let you scare
Truth - Will never let you be weak
Love - will never let you jealous
Belief - Will never let you be sad
Work - Will never let you fail.
Spiritualism - Will never let you attract to negativity.

**Puneet**
B.A 4th Semester

## "LIFE"

Life is a challenge - Meet it.....
Life is a gift - Accept it.....
Life is a Adventure - Date it.....
Life is a Duty - Perform it.....
Life is a song - Sing it.....
Life is a Journey- complete it.....
Life is a Puzzle - Solved it.....
Life is a Goal - Achieve it.....
"Life is a beautiful - Feel it."

**Arpna Manhas**
Class B.A. 4th Semester
Roll No. 104

# "MESSAGE TO MY TEACHER"

You supported me
When I was falling down
Inspired me to graft the crown
It was you
Who helped me to break the chain
Else I was failing again and again
I could write my success story
It was you who led me on the road to glory.
Through my words
I want to thank my teacher who inspired me for a bright future.

**Rozy**
B.A. 4th Semester
Roll No.801

---

# *"My Feelings About Teachers"*

Teacher are the most precious gift to humanity Teacher is like a candle that burns itself and gives light of knowledge to all. A mother can bring up a child, but a teacher makes a child the best 'Human being'. God is great but teachers is greater than God, as it is the teacher who he/she himself/herself is the part of Godliness. There are two things in the world that give "Vidya" to us, first is teacher and other are parents, and the grace of both takes a man to the pinnacle of glory.

A teacher helps us to learn from yesterday, live for today and hope for tomorrow. Teachers guide us throughout the life like a mother right from the beginning. Teachers and students relation is like a gardener and his trees, who waters and cares till their roots spread around and finally grow into the flowering trees.

**Monika Jamwal**
B.A. 4th Semester, Roll No. 413

# "TEACHER"

Teacher is like a lamp.
Who gives us light of knowledge
Teacher is like a sky
Which has limitless love for students.
Teacher is like a God,
Who gives us a new life.
Teacher is like a mother,
Whose love is equal for all
Teacher is like a flower,
Who gives us the wealth of education.

**Neha Jamwal**
B.A. 4th Semester, roll No. 416

# FUNNY INTERVIEW

| | | |
|---|---|---|
| Officer | - | What is your Name? |
| Candidate | - | Sir, Shri Bhagwan Dass |
| Officer | - | Tell in English |
| Candidate | - | Oh, Sir my name is God |
| Officer | - | What is your qualification? |
| Candidate | - | Sir, Ph.D. |
| Officer | - | What do you mean by this? |
| Candidate | - | Sir, I have passed higher Secondary with difficulty |
| Officer | - | What is your father's name? |
| Candidate | - | Sir, Sh. Sitara Chand in English it is star moon. |
| Officer | - | What is his profession? |
| Candidate | - | Sir, he is 'ICS' in Summer & 'PCS' in winter |
| Officer | - | What do you mean by it? |
| Candidate | - | Sir, I mean that he is an Ice-cream seller in summer & photo chips seller in winter |
| Officer | - | Do you likee games? |
| Candidate | - | Sir, I'm champion of my village in guli-danda |
| Officer | - | (in anger) Get out. |
| Candidate | - | Thank you Sir, |

**Shikha Pathania**
B.A.-IVth Semester

## "FAILURE IS NEVER FINAL"

Failure, this word gives a lot of anxiety and fair to most of us, we, certainly, can overcome failure if we re-define failure as:-

I Failure:- does not mean you have failed. It does mean that you have not succeeded yet.

II Failure:- does not mean your have accomplished nothing. It does mean that you have learnt something.

III Failure:- does not mean you have wasted your life. It does mean you have a reason to start a new.

IV Failure:- does not mean you are finished, it means that you are writing to try

V Failure:- does not mean God has abandoned you- it does mean God has a better idea.

Therefore, failure is never final.

**Archana**
B.A. 4th Sem.
Roll No.: 813

---

# ENGLISH: A KEY TO SUCCESS

English has taken from a universal language. It is the only language which is spoken and understood in most of the countries of the world. The computers of the world are operated in this language most of the advanced literature is written only in the language. The study of science can be useful at the engineering or medical field only if it is in English. All the research work carried out in the world is in English. In fact this is the language of most of the IT companies, tourism industry, engineering of the medical, export, fashion, hotel etc. The influence of English language can be felt in every sphere of life and society. If such is the stature of this so this so called foreign language, then it is necessary that a person should master this language. I do not say that our mother tongue Hindi is inferior or should not be used. But keeping in the changing world scenario, impact of globalization as well as the use of modern technology it has become mandatory to have the knowledge which is all around us. Try to learn the meaning of all simple words around you in the context of their usage. Make very simple words around you in the context of the usage. Make very simple sentences without hesitation. Try to make different sentences using the same pattern and structure. Never hesitate or feel shy to speak English among your friends. Try to be in a group who is interested in learning and make diary writing your habit. Once you would start enjoying, gradually, the key of English will be yours.

**Minakshi Guleria**
B.A. 4th Semseter
Roll No. 805

## "PARTS OF SPEECH"

A noun is the name of everything
Like man, institution, place or thing
In the place of noun, pronoun stands
Like his eyes, his nose and her hand
Verbs tell about everything done,
Teach, reach, take, give and run
How things are done adverbs tell
As slowly, quickly, ill or well
Conjunction joins the words together
As brother and sister, wind and weather
Nouns, pronouns have preposition before,
as on the chair and through the door,
Interjection shows always surprise,
Oh! How beautiful, Ah! how wise
There are articles only there
Those are 'A', 'An'and 'The'
All are called parts of speech
by which we learn and teach.

**Deeksha Samkaria**
B.A. 4th Semester
Roll No. 802

## "AN INTERVIEW WITH WILLIAM SHAKESPEARE"

1) What is your name?
   William Shakespeare
2) What is your father's name?
   King Lear
3) What is your father?
   The Merchant of Venice
4) Who is your best friend?
   Julius Caesar
5) Who is your enemy?
   Macbeth
6) Who are you most inspired by?
   Romeo and Juliet
7) Who were your special guesls?
   Antony and Cleopatra
8) How do you find your married life?
   The Tempest
9) What is your life like?
   Comedy of errors

**Shruti Devi**
B.A. 4th Semester
Roll No. 620

## "THE BEST MEDICINE"

Laughter is the best medicine for health. It is much more important than any amount of wealth, When a person laughs all the tension and unhappiness go away, making his life brighter and happier day by day. Laughter makes a person bloom like flowers, also it helps in crossing all kinds of difficulties. The cost of this medicine is rupee zero, but it make a person wonderful hero. Sorrow and unhappiness on face cannot one's problems of this I am sure. At least only the medicine of laughter is 100% pure and is life's only cure.

**Tamanna Sharma**
B.Com. 4th Semester

# "THE ROLE OF A MOTHER"

It is the hand of the mother that rocks the cradle of the body. The mother is the power behind the greatness of kings, rulers and emperors. The men who rule the world are born and brought up in the lap of the mother. The mother is the greatest king-maker in the world. She produces sons who sit on the throne and wear the crown. We must realise the importance of the role of the mother. She is a might force. She can change the shape of the world. She can change the course of history. She is the first teacher and guide of the child. It is she who gives the first lessons of greatness. Only a great mother can produce a great son. She sings song of bravery and makes the child a brave man Shivaji and Napoleon owed their greatness to their mothers. Good mother can certainly shape the destiny of a nation. They can make the world a better and happier place to live in. So we must see that mothers are given due respect and honour. We must see that they are well educated.

**Komal Kumari**
Class B.A. 4th Semester
Roll No. 641

# "POLLUTION"

Pollution Pollution, every where is Pollution,
Is there any solution to stop his awful pollution,
People throw rubbish all around
Making the town a garbage mound,
Smoke from buses and the cars,
Blacks out the lovely sky and stars,
The water of Holy river pure,
Are not to same that I am sure,
Factories being built at faster rate,
Destroy the greenery in their wake,
Which leads to less and lessere rain.
Alas! the farmer's cry in vain.
All because of pollution
is there any solution?
Make the word a sight
Which will please,
Let pollution decrease and greenery increase.

**Sonali Devi**
B.Com. 4th Semester
Roll No. 1061

# "PLANET ROLL CALL"

Nine planets around the sun
Listen as I call each one
Mercury? Here! Number one
Closed planet to the Sun
Venus? Here! Number two
Shining bright just like new
Earth? Here! Number three
Earth is home to you and me.
Mars? Here! Number Four
Red and ready to explore
Jupiter? Here! Number five
Largest planet, that's no five
Saturn? Here! Number six
With rings of dust and icemix
Uranus? Here! Number Seven
A planet titled high in heaven
Neptune? Here Number eight
With one dark spot whose size is great.

**Nidhi Guleria**
B.A. 6th Semester, Roll No. 167

हलदूण

# "WHAT IS SUCCESS"

⇨ At the age of 4 years, success is.....
That you do not urinate in your pants!

⇨ At the age of 8 years, success is.....
To know the way back home

⇨ At the age of12 years, success is.....
To have friends!

⇨ At the age of 18 years, success is.....
To get a driver's license!

⇨ At the age of 23 years, success is.....
To graduate from a univeresity!

⇨ At the age of 25 years, success is.....
To get a job!

⇨ At the age of 30 years, success is.....
To be a family man!

⇨ At the age of 35 years, success is.....
to make money!

⇨ At the age of 45 years, success is.....
To maintain the appearance of a young man!

⇨ At the age of 50 years, success is.....
Still be able to perform your duties!

⇨ At the age of 60 years, success is.....
Still be able to keep driving license!

⇨ At the age of 65 years, success is.....
To live without disease!

⇨ At the age of 70 years, success is.....
To not be burden on anyone!

⇨ At the age of 80 years, success is.....
To know the way back home!

⇨ At the age of 85 years, success is.....
That not to urinate in your pants again!

Life is a cycle, Live as much you get.....

**Nishant Choudhary**
B.A. IVth Semeste
Roll No. 501

# "LIFE IS A DREAM"

Life is a dream
Just flowing as a stream.
Life is a sorrow
So don't depend on tomorrow.
Life is a play
To reach goal, its the only way
Life is birdnest
In which there is no rest.
Life is a war
It's aim is so far
Life is a joy
Life is a context
In which there in no East or West.
Life is happiness so be happy.
Otherwise is would be useless.

**Priti**
Class B.Com. 2nd Semester
Roll No. 16120

# "APING THE WESTERN CULTURE"

It is now more than sixty-four years when the British left our country and we became a free nation but sadly. the west still dominates our way of life and thinking. The younger generation apes everything that is typical of the western culture. They ape their fashions in dress, their music, dances and even their habits of food. By doing so, they think can give an impression of being modern. But to me, it is quite the opposite. By aping western culture they do nothing but give an impression of being thick-headed clowns. They have gone so crazy for the Western styles that they have forgotten all about their own culture and traditions. They don't know what Holi or Diwali is about but they know all about the Valentines Day. They would hardly ever visit a temple, but would never miss visiting a bar or coffee house. they prefer fast and junk foods to the fresh and poor foods cooked at home. "Hellos' and 'Eyes' have taken the place of respectful 'Namastey'. In the name of liberalism and modernism, all sense of shame and decency has been thrown to the winds. The younger generation must remember that the sun (the symbols of all light and knowledge) rises in the East and sets in the West.

**Pallavi**
Class B.A. IInd Semester
Roll No. 16402

# "IMPORTANCE OF CHARACTER"

A good character is necessary in the life of person. It is the moral strength of a person our character is our destiny. Without good character, life is nothing. There is no great man in the world who is not the master of strong moral character. No man is respected for his handsome looks. Everyone is respected for his good character and behaviour. Some one has rightly said, 'If wealth is lost, nothing is lost, but if character is lost, everything is lost. So we can say that character is the most important thing in the life of a person

'Let this be your motto
Character is my degree
Life is my examination
Universe is my university'

Therefore, always listen to your heart and always do good deeds. You will always be respected. Good character is the gift for every good person.

**Priyanka**
B.A. (4th Semester)
Roll No. 639

# "GOLDEN WORDS"

1) Love is the gate of all secrets of universe.
2) If you think yourself weak, weak you will be, if you think yourself strong, strong you will be.
3) The goal of mankind is knowledge.
4) Death being certain, it is better to die for a good cause.
5) Books are useless to us untill our own book opens.
6) No mankind should be judged by its defects.
7) Every great achievement is done slowly.
8) The best guide in life is strength.
9) The man works best if he works without any motive.
10) The greatest religion is to be true to your own nature.

**Sarchna**
Class B.A. 4th Semester

# "RIGHTS AND DUTIES OF STUDENTS"

A student by definition, is one who is wedded to studies. He is a devotee in the holy temple of learning. His highest aim is to attain more and more knowledge. He studies his books with a pious and humble heart. He seeks the guidance of his teachers with utmost respect. Beside books he takes a healthy interest in games and sports. He takes due care both of his body and mind. It is his duty to give due courtesy and respect to all and it is his right to have free access to knowledge. He has the right to read the latest books, magazines and newspaper in the library. It is well within his right to have a free access to all the teachers. He has every right to carry his doubts and difficulties to his teachers and get them resolved

# "THE VALUE OF DISCIPLINE"

Discipline means order. It is the law of life. It is a set of rules for society. It is very essential for civilized life. Obedience is the chief part of discipline. It is a necessary condition in every walk of life. College students sometimes take a very narrow view of it. They think it is an unnecessary check on their freedom. But it is an essential condition for academic atmosphere. No work of study is possible without discipline. society also needs obedience to certain code of moral and social behaviour. National development is possible only if all the people obey certain rules of national behaviour. Gandhiji always stressed the need for discipline. However, discipline is not physical or imposed from above. It springs from within. The best discipline is self discipline. It arises out of love for others and harmony in life. Individuals as well as nations must inculcate discipline. It should start in the family, the school and the college. It must become a habit and a way of life.

**Divya Bharti**
B.A. 6th Semester
Roll No. 183

# "A POEM FOR MOM..."

You are the sunlight in my day.
You are the moon I see far away
You are the one I lean upon
You are the one that makes troubles by gone.
You are the one who shaped my life.
How not to fight and what is right
You are words inside my tongue
You are my love my life, My mom
You are the one who cares for me
You are the eyes that help me see
You are time to have fun and time to rest,
You are one who helped me dear
You are the greatest friends I know.
You are the world inside my soul
You are my love my life my mom.

**Neha Kumari,**
Roll No. 108, B.A. 6th Semester

# MY FRIEND

My friend should be
My medicine when I am in pain
My solution, when I am in a problem
My letter, when I am far
My smile, when I am sad
My hanky, when I cry
And my life, when I die

**Shilpa**
B.com. IInd Semester
Roll No. 16105

# LIFE WITHOUT TEACHER

Life without teacher is just like a flower with fragrance.
Life without teacher is just like a temple without God
Life without teacher is just like a society without sovereignity.
Life without teacher is just like a drama without director.
Life without teacher is just like a book without writer
I am thankful to God as he has blessed me with teacher.

**Divya Bharti**
B.A. 6th Semester
Roll No. 143

---

# FIRST "WOMEN" IN INDIA

1. Woman (Muslim) Ruler of India: Razia Sultana
2. Woman Advocate : Cornelia Sarabji
3. Woman Ambassador: Vijay Lakshmi Pandit
4. Woman In Antarctica: Mehar Moos
5. Woman central Minister: Raj Kumari Amrit Kour
6. Woman chief Justice: Leila Seth (H.P.)
7. Woman chief Minister: Sucheta Kriplani
8. Woman (Deputy foreign Minister): Lakshmi N. Menon
9. Woman Secretary General of Rajya Sabha: V.S. Rama Devi
10. Woman to got to in space: Dr. Kalpana Chawla
11. Woman Goverenor: Sarojani Naidu
12. Women IAS Officer: Anna Rajan George
13. Women IPS Officer: Kiran Bedi
14. Women Pilot: Prem Mathur
15. Women Judge in Supreme Court: Meeta Sahib Fatima Beevi

**Kanika**
Class B.A. IVth Semester
Roll No. 616

# THE EMPOWERED WOMAN

The Empowered woman, she moves
through the world
with a sense of confidence and grace
Her once reckless spirit now
tempered by wisdom
Quietly, yet firmly, she speaks her truth
Without doubt or hesitation, and
the life she leads is of her own creation
She now understands what it
means to live and let live
How much to ask for herself and
how much to give
She has a strong, yet generous heart
and the inner beauty she emanates
truly sets her apart
Like the mythical Phoenix,
she has risen from the ashes
and soared to a new plane of existence,
Unfettered by the things that
Once that posed such resistance.
Her senses now heightened, she
sees everything so clearly
She hears the wind rustling
through the trees;
beckoning her to live the dreams
she hold so dearly.
She feels the softness of her
hands and muses at the strength
that they possess.
Her needs and desires she has
learned to express.
She has tasted the bitter and
savored the sweet fruits of life.
Overcome adversity and pushed
past heartache and strife.
And the one thing she never understood,
she now knows to be true,
It all begins and ends with you.

**Monika Thakur**
B.A. IInd

# SAVE THE GIRL CHILD

It is said that God created mothers because he could not be present everywhere. It is unbelieveable to realize that a God's representative is continuously killing someone beautiful even before she can come out and see the beauty of nature. In India, she is the Goddesses to be revered in the form of Laxmi, Sita and even in the form of Durga (Killer of evil) but does that happen in real life? The picture in real life is quite different we all are proud citizens of India. The need of our is to realize our responsibilities and give a halt to this evil crime. What can be do the curb the brutal and undesirable practice of mass killing girls? A determined drive can initiate a spark to light the lamp and show the world that we all are part of the great mother India.

**Shikha Thakur**
B.a.IInd Semester

## WHY NOT A GIRL?

People pray for a boy, not for a girl
They desire a boy, not a girl
Blessing of elder are for male,not for female.
They love to have a boy, not a girl
But.....
In need of wealth.
They pray the Goddess Lakshmi
In need of courage,
They go to Goddess Durga
In need of education,
They call upon Goddess Saraswati
Now tell me?
Why do they hesitate?
to have a Devi in the family?

**Ruchi Guleria**
B.A. IInd

## THE VALUE OF TIME

Time is very precious. We should not waste time. Time lost forever. If you waste your time, time will waste you. Money spent can be earned again. It is not so with time. It can never be got back. Almost everything in the world can be purchased. As easy second tick away that second moves present to past. If you have not wasted and it is already lost and become the past. No amount of crying or trying can bring you back the past. If you want success in life use time properly. Mind the present and make full use of it.

**Pratibha**
B.A. IInd Semester
Roll No. 16401

## MONEY IS NOT EVERYTHING

Money can buy medicine
But not health
Money can buy a flower
But not fragrance
Money can buy a watch
But not time
Money can buy books
But not knowledge
Money can buy a candle
But not light
Money can buy a House
But not family
Money can buy a gift
But not love.

**Akhil Kumar**
B.A. IVth Semester
Roll No. 5

## EASY V/S DIFFICULT

Saying is easy
But doing is difficult
Getting education is easy
But getting knowledge is difficult
Thinking is easy
But acting on it, is difficult
Doing evil is easy
But understanding is difficult
Losing character is easy.
But regaining it is difficult.

**Abinash**
B.A. IVth Semester
Roll No. 634

# वार्षिक समारोह की कुछ झलकियां

कॉलेज के तोरणद्वार पर मुख्य अतिथि
श्री नीरज भारती का स्वागत करते अध्यापकगण

वार्षिक पारितोषिक उत्सव पर संगीत सुरों में
मंत्रमुग्ध माननीय मुख्य अतिथि श्री नीरज भारती
व अन्य

नृत्य की तरंग में नृत्य करतीं
कॉलेज की तरूणियां

वार्षिक समारोह में टग आफ वार विजेताओं को
सम्मानित करते मुख्य अतिथि

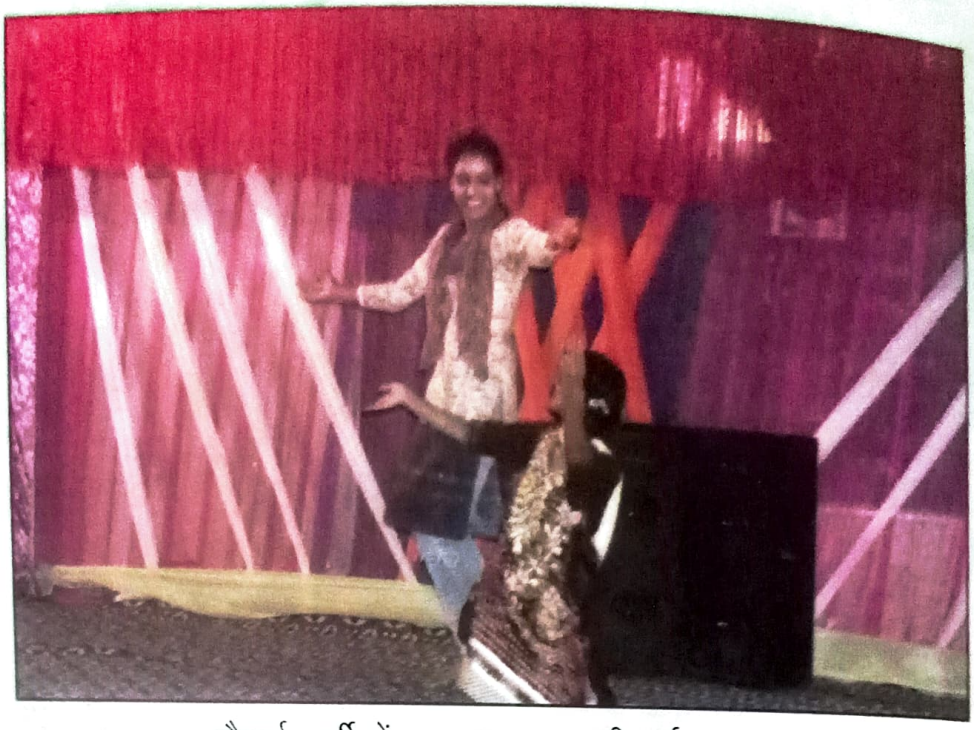

फैशर्ज पार्टी में नृत्य प्रस्तुत करती हुई छात्राएं

कार्यक्रम का आनन्द उठाते महाविद्यालय के विद्यार्थी

वन महोत्सव पर पौधारोपण की विधि बताते
वन मण्डल अधिकारी, देहरा एवं स्टाफ व बच्चे

विद्यार्थियों द्वारा रंगोली प्रतियोगिता के तहत बनाई रंगोलियां

महाविद्यालय के निर्माणाधीन भवन का एक दृश्य

हिन्दी दिवस पर भाषण देती प्रतियोगी

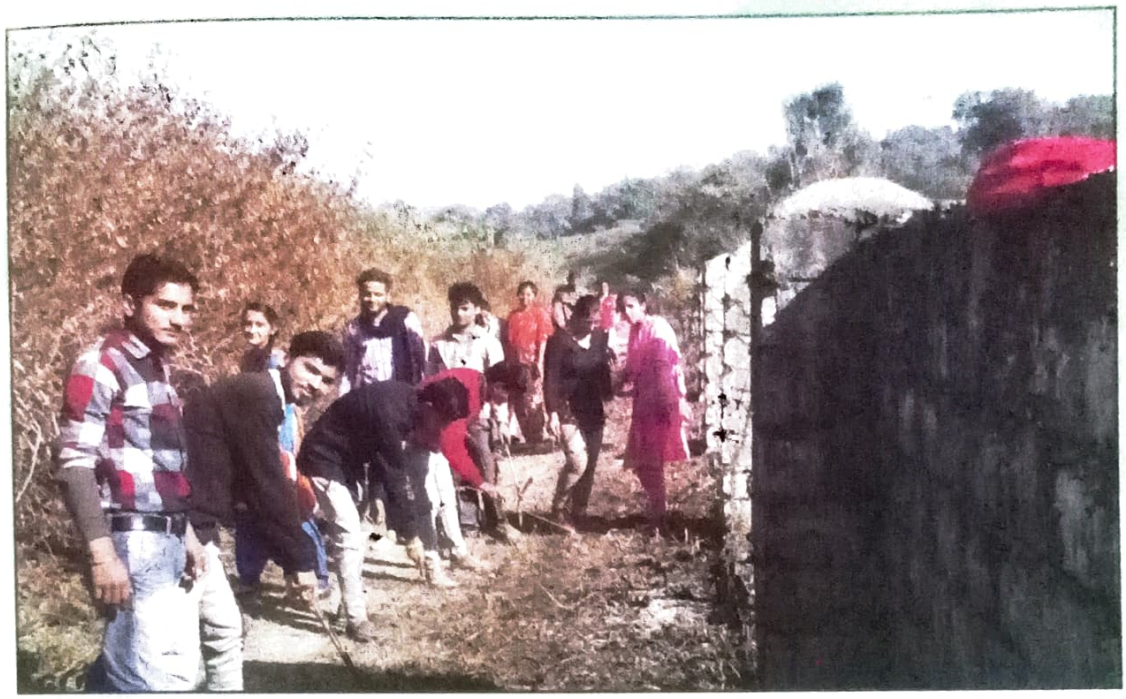

एन.एस.एस. के विद्यार्थी स्वच्छ भारत मिशन के तहत
सफाई कार्यक्रम में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत मिशन के तहत एकत्रित कूड़े के साथ
एन.एस.एस. के विद्यार्थी

महाविद्यालय के फैशर्ज पार्टी का एक दृश्य

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समूहगान प्रस्तुत करती छात्राएं।

# Haldoon

# PLANNING SECTION

Session *2016-17*

**Staff Editor**
Harsh Deepika Datta

**Student Editor**
Arju Devi

# Editorial.....

Dear Readers

First of all I express my special thanks to my teacher and guide who has give me an opportunity to play the role be Editor of Magazine-Editor of Commerce section.

All of us know that this is the first issue of college magazine and we feel proud for it.

It provides a platform to students to express their creative ideas in a free and fair manner and space to highlight various achievements of the college around the year.

I hope the reader would enjoy by reading our college magazine.

Thanks

Magazine Editor

**Arju Devi**

# INSURANCE

Insurance has been an important part of the Indian financial system untill recently, insurance services were provided by the public sector, i.e. life insurance by the life Insurance Corporation of India and General Insurance by the General Inurance Corporation and its four subsidiaries.

**LIFE INSURANCE CORPORATION (LIC)**

Establish - Sept 1st, 1956
Head Office - Mumbai
Zohal Office - Mumbai, Kolkata, Delhi, Chennai, Kanpur, Hyderabad and Bhopal

**GENERAL INSURANCE CORPORATION (GIC)**

Established - Jan 1st, 1973

It has four subsidiary companies:

1. National Insurance Company Ltd.
2. The New India Insurance co. Ltd. Mumbai
3. The Oriental Fire & General Insurance Ltd. New Delhi.
4. United India fire & General Insurance Co. Ltd. Chennai.

In the year 2000, The IRDA was constituted as an autonomous body to regulate and develop the busienss of insurance and reinsurance in the country in terms of the Insurance reinsurance in the country in term of the insurance regulatory and development authority Act, 1999.

**Arju**
B.Com. VI
Roll No. 301

# Some Internatonal Organisations

## World Trade Organisation (WTO)

Organisation came into existence in the year 1995 in Place of General Agreement on Tariffs and Trade (Gatt). As agreed by the representative of 128 Participating Nations in Uruguay round, WTO is given the authority to ovrsee trade in industries Products, agricultural Products as well as service. Its main objective is to promote world trade in a manner that benefits every country by eliminating tariff and non-tariff barriers. WTO consists of a council for goods, a council for services and a council for intellectual property rights. There were 128 member countries of WTO on 1st January, 1995. Since then the number of member countries has been increasing presently. There are 159 members of WTO. India is one of the founder members China and Taiwan were also enrolled as members of WTO during Doha Conference (9-13 November,2001)

## World Bank:

The International Bank for Reconstruction and Development (IBRD) or the World Bank is an inter governmental institution and corporation in form. The bank was established in 1945.

## International Monetary Fund (IMF):

International Monetary Fund was founded on 27th December, 1945. It began functioning with effect from 1st March 1947. In 1947 they were 45 member countries of I.M.F. Presently the membership has risen to 188.

## UNCTAD:

Its main objectives are to promote economic development of less developed country stimulate their exports and to extend development related financial assistance.

Manisha Bharti
Roll No. 313
Std. B.Com. 6

# Why India is Backward and Poor

| | | |
|---|---|---|
| Income is less | - | Expenditure is more |
| Work is less | - | Strikes are more |
| Duties are less | - | Rights are more |
| Honesty is less | - | Corruption is more |
| Followers are less | - | Advisers are more |
| Production is less | - | Consumption is more |
| Resources is less | - | Population is more |
| Compelities is less | - | Donation is more |
| Development is less | - | Poverty and backwordness is more. |

**Rajat Choudhary**
B.Com. 6th
Roll No. 380

# BALANCESHEET OF LIFE

Our birth is our opening balance,
Our death is our closing balance.

Our prejudiced views are our liabilities,
Our creative ideas are our assets.

Heart is our current Assets,
Soul is our fired Assets.

Brain is our fixed deposit,
Thanking is our current Assets.

Achievements are our capital character,
And moral our stock in trade.

Friends are our general reserve,
Value and behaviour are our goodwill.

Knowledge is our investment
Experience is our premium account.

The aim and achievement make
an Balance Sheet.

**Arju Devi**
B.Com. 6th Semester
Roll No. 301

# RESERVE BANK OF INDIA (RBI)

The Reserve Bank of India (RBI) is India's Central Banking Institution which controls the monetary policy of the Indian rupee.

**Established:**

1st April, 1935 during the British Raj in accordance with the prevision of the RBI Act, 1934

**Head Quarters:** Mumbai (Kolkata 1935-1937)

**Present Governor:** Urjit Patel

**RBI:- Central Board of Directors:**

The Government of India appoints the directors for a four year term.

The Board consists of a governor four deputy governers, fifteen directors to represent the regional boards, one from the Ministry of Finance and ten other directors from various field.

The bank has also training colleges for its officers, viz Reserve Bank Staff College at Chennai and college of Agricultural Banking at Pune.

There are also four zonal training centres at Mumbai, Chennai, Kolkata and New Delhi.

**Shweta**
Class - B.Com 6 Semester

---

## Establishment years of Major financial Institution in India

| | |
|---|---|
| Imperial Bank of India Reserve Bank of India | 1921 |
| Nationalisation of RBI took place on | Jan. 1,1949, April, 1935 |
| Industrial Finance Corporation of India (IFCI) | 1948 |
| State Bank of India (SBI) | July 1, 1955 |
| Unit Trust of India (UTI) | Feb., 1, 1954 |
| IDBI | Juy, 1964 |
| NABARD | July, 12, 1980 |
| IRBI(Now it has been renamed as RBIL) | March, 20, 1985 |
| SIDBI | 1990 |
| EXIM Bank | Jan. 1, 1982 |
| National Housing Bank | July 1, 1988 |
| Life Insurance Carp. (LIC) | Sept., 1956 |
| General Insurance Corporation (GIC) | Nov., 1972 |
| Regional Rural Bank (RRBs) | Oct. 2, 1975 |
| Housing Development Finance Corporation Ltd. (HDFC) | 1977 |

Ruby
B.Com. 6th Semester Roll No. 312

# E-Commerce in India

India had an Internet user base of about 354 million as of June, 2015.

1. It is expected to cross 500 million in 2016.
2. Despite being the second-largest China (650 million, 48% of population the penetration of e-commerce is low compared to the markets like the united states (260 million, 84%) of France (54M 81%) but is growing at an unprecedented rate adding around 6 million new entrants every month.
3. The industry censuses is that growth is at an inflection point.
4. In India cash on delivery is the most preferred payment method, accumulating 75% of the e-retail activity.
5. Demand for international consumer products (including long tail items) is growing much faster than in country supply from authorised distributes and e-commerce.
6. Intermediaries:- For intermediaries were flipkart, Snapdeal, Amazon India and paytm.
7. Market size and growth closuses, infrastructure, Funding Niche, retailers, see also references.

Sanjay Kumar
B.Com. 6th Semester.

---

# Securities and Exchange Board of India (SEBI)

SEBI Regulates The Functions Of Securities market. SEBI promotes orderly and healthy development in the stock market but initially SEBI was not able to exercise complete control over the stock market transaction.

**Established:-** 1988 and given statutory powers on12 April, 1992 through the SEBI Act, 1992.
**Head Quarters:-** Bandra Kurla Complex in Mumbai.
**Chairman:-** Upendra Kumar Sinha
**Purpose:**

1. Issues:- For issuers it provides a market place in which they can raise finance fairly and easily.
2. Investors:- For investors it provides protection and supply of accurate and correct information.
3. Intermediaries:- For intermediaries

**Riya Rani**
Class B.com. 6th Semsester,
Roll No. 309

# Digital India

Launched in India on July, 2015 by Prime Minister Mr.Narendra Modi Digital India's. It plans to create on IT (India Tomorrow) using IT (Indian Talent) and IT (Information Technology) by pursing three objectives digital infrastructure as a utility to every citizen, governance and service on demands and digital empowerment of citizen the three key areas are.

**Governance:** Since governing the largest democracy in the world's no small task.

Agriculture is the backbone of the Indian economy.

Education the seminar force that shapes the country is future citizen digital India can bring in significance transformation in almost every field of governance "Digital India should complementary to the other ambitions schemes unreiled by the government lately, digital India cannot work without make in India skill in India can bring in the desired transformation. Any policy action in the agriculture sector should strive to address these keys issues" digital India is a step in the right direction providing adequate timely agri-information to farmer guiding them to adopt the right ensuring digital connectivity in rural India and by providing the farmer with the scope to negative for better price and acquire market access coupled with suitable policy changes, digital India can Kick start the efforts to improve the share of agriculture in India's economy. the smart cities scheme that aims to build 100 smart cities across the country when coupled with digital digistising can make the task of asier only a convergence of all the existing, schemes can endow India with the Power of Empower as the moto of digital India goes.

Prem Lata

B.Com. 6th Semester

# CAPITAL MARKETS

It is a market in which individuals and institutions trade financial securities both long-term debt and equity shares organizations in public and private sectors often sell securities on capital markets to raise funds. Both the stock and the bond Markets are part of the capital markets. This type of Market is compared of primary and secondary markets.

for example: When a company wants to raise money from the public for the first time, it issues shares/securities to the public using capital market. This is primary market.

Also when the government has to raise money, it issues bonds to the public via bond market.

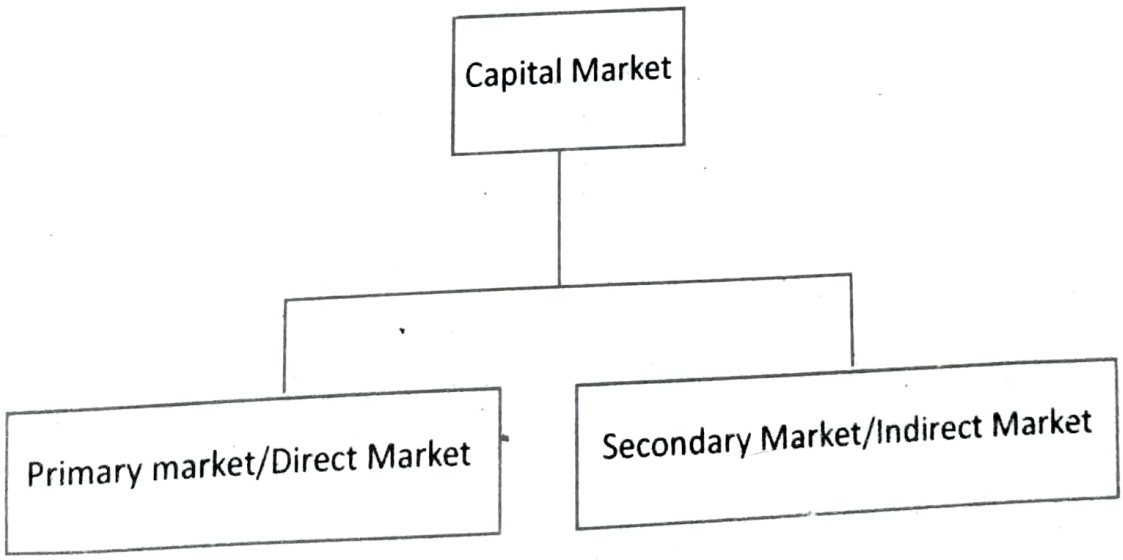


Tamanna Sharma

B.Com. 6th Semester

Roll No. 335



हलदूण

# Payment System in India

Payment and settlement system induldge are payment settlemetn system in India for financial transactions.

**RTGS (Real Time Gross Time):-**

RTGS System is a funds transfer mechanism for transfer of money from the bank to another on a real time and on gross basis through the banking channel settlement in real time means payment transaction is not subjected to any waiting period.

Net settlement system include Electronic clearing (ECS) NEFT and immediate payment service.

**NEFT (National Electronic Funds Transfer System):-**

The RBI has introduced a system called. The Reserve Bank of India National Electronic Funds transfer system which is referred to as NEFT System.

The transaction under this system may be made for amounts inclusive of a paisa component when there is no upper value limit for putting through and individual NEFT transaction.

Om

Class B.Com. 6th Semester

Roll No. 318

# हलदूण

## पहाड़ी अनुभाग

## सत्र 2016-17


प्राध्यापक सम्पादक
मोनिका शर्मा

छात्र–सम्पादक
निशान्त व
विनीत

# सम्पादकीय

मेरे प्यारे साथियों,

मिंजो अपणे कालेज दी पत्रिका ''हलदूण'' दे पहाड़ी विभाग दा सम्पादन करदे बड़ी खुशी होआदी। मैं अपणे जो भाग्यशाली समझदा की मेकी ए मौका मिलेआ। दोस्तों ए इक ऐसा मंच है जित्थू सांझो अपणे विचार प्रकट करने दा मौका मिलदा। पहाड़ी भाषा ता साड़ी अपणी भाषा है कनै साड़ी पछाण है, पर हौली–हौली साड़ी ए पछाण धुंधली लगी पेई होणा। असां पता नी कजो इसा जो लिखणे बोलणे दी शर्म समझणा लग्गे। दोस्तों जिंया असां अपणी माँ कन्ने प्यार करदे तियां पहाड़ी भाषा भी साड़ी माँ है, इसा लिखणे बोलणे दी बड़ी शर्म मत करा। ताँ दोस्तों गर्व करा अपणिया इसा भाषा पर कनै चुक्का कलम, लिखा कुछ विचार, देआ सम्मान अपणिया पहाड़ी भाषा जो

मैं सारे विद्याथियां दा धन्यवाद करदा जिन्हा अपणे लेख पत्रिका च छपणें जो दित्ते, मैं अपणे अध्यापकां दा भी धन्यवाद करदा जिन्हा मिंजो इस लायक समझेया की मैं ऐ जिम्मेदारी लेई सकां।

निशान्त चौधरी
बी.ए.द्वितीय (चौथा सैमेस्टर)
अनुक्रमांक 501
छात्र सम्पादक, पहाड़ी अनुभाग

# होणा जरूरी है

नलके च पाणिए दा, बच्चेया च कहाणियां दा
बुजुर्गा च नानिए दा होणा जरूरी है।
नम्बरा च जीरें दो, फिल्मा च हिरो दा
रोटिया च खिरा दा होणा जरूरी है।
गड्डिया च तेले दा, पिंडा च मेले दा
पेपरां च फेले दा होणा जरूरी है।
रसोई च चुल्हे दा, ब्याह च दूल्हे दा
खेतरां च कुल्हा दा होणा जरूरी है।
घरां च गेटे दा, मुहल्ले च सेठे दा
मिठाई च पेठे दा होणा जरूरी है।
जिन्दगी च पुलेखे दा, दुबई च शेखे दा
पत्रिका च लेखे दा होणा जरूरी है।

रिशी घई
अनुक्रमांकः 207
बी॰ए॰छठा सैमेस्टर

# सोचा कनै विचार करा

पीणा है तां गमा जो पिया,
सिखणा है तां तमीज सिखा,
दैणा ए तां दान देआ,
लैणा ए तां आशीष लेआ.....
बोलणा ए तां मिठ्ठे बोल बोला,
घोलणा है तां भाईचारा घोला,
मारना ए तां मने मारा,
तारना ए ता खानदाने जो तारा.....
गुल्लणा ए तां जहरे गुल्ला,
भुल्लणा ऐ ता दुश्मणी भुल्ला.....
ढाणा ऐ तां अंहकारे दे महले ढा,
करना कुछ तां रोंदे जो हंसा.....

पुनीत कुमार
अनुक्रमांक 525
बी॰ए॰चौथा सैमेस्टर

# जाग मेरे हिमाचलिया

सारे लोक जागे, जागेया जमाना,
कैं नी जागदा हिमाचली जुआना।
अजै होर सड़का ते बिजली बणानी,
अजै होर नगरी बसाणी।
घर–घर साई सन्हा बसाणा,
सारे लोक जागे, जागेया जमाना।
रली मिली गरीबी जो असां नठाणा,
सारे लोक जागे, जागेया जमाना
पहाड़ा दी धरती, दुनिया ते न्यारी,
लखां जड़ी बूटिया दुनिया तो न्यारी
हिमाचले दी धरती जो स्वर्ग बणाणा
सारे लोक जागे जागे आ जमाना
कैं नी जागदा हिमाचली जुआना।

नितिन मौराया
अनुक्रमांक – 211
बी॰ए॰छात्र सैमेस्टर

# एक फौजिए दी फरियाद

इक घायल फौजी मरदे होए अपणे साथिए जो बोलदा
मॉ मेरी पुछगी तां सिरे झुकाई लंआं,
नी मनगी तां दूधे दा कर्ज चेताकराई देआं.....
बापू पुछगा तां नजरां फरांई लेआं,
नी मनगा तां मेरी बर्दी दिखाई देआं.....
भाई पुछगा तां बचपन चेता कराई देआं,
नी मनगा तां सच्ची गल्ल गलाई देआं.....
बहन पूछगी तां चुप्प होई जायां,
नी मनगी तां रखड़िया दी कसम कराई देआं.....
जे मेरे बच्चे पूछगे तां मेरा लाड चेता कराई देआं,
रोंगे ता लाश दिखाई देआ.....
दोस्त पूछगे ता भरा फर्ज चेता कराई देआं,
नी मनगे तां "तिरंगा" दिखाई देआं.....
इतना कह कर फौजी दम तोड़ देता है.....

शिक्षा: देश दे आं फौजी बीरां दा मान सम्मान करा कनै तिनां जो याद रखा।

अखिल कुमार
बी॰ए॰छठा सैमेस्टर
अनुक्रमांक 530

# "पढ़ने कनै परीत तू पाई लै"

मन गल्ल मेरी, मने लाई लै,
पढ़ने कनै परीत तू पाई लै.....
सिखी लै मड़ेआ, मन लाई सिखी लै,
गौए गौए ज्ञान तू पाई लै.....
मुड़ी-मुड़ी नी मिलणी जिन्दगी,
पढ़ी लिखी इसा जो वणाई लै.....
अनपढ़ जिन्दगी नकारी ओ,
अपू पढ़ मुन्नुए भी पढ़ाई लै.....
कजो जीणा तू इयां गवाईता,
मने जोतू पढ़ने च लाई लै.....
लोकां दे मैजरा जो भुली जा,
पढ़ने कनै परीत तू पाई लै.....

नीरजा
बी॰काम॰-दूजा सैमेस्टर

# ठीक गलाया ना.....?

मुर्गा: पिंडा दी अलार्म घड़ी।
घर: सस्सू नूआं दी संग्राम भूमि
मुकदमा: बकीले दा कमाऊ पुतर।
कालेज: कुमणे कनै धुप्प सेकणे दी जगह।
कुर्सी: अफसरां दे आरामें दी जगह
चाह: कलयुगे दा अमृत
नर्स: टीके लाणे वाली तरमोड
शमशाण: दुनियादा आखिरी स्टेशन।

अर्पण
बी॰ए॰छठा सैमेस्टर
अनुक्रमांक 104

# हिमाचलियां दी प्याग

प्यागा–प्यागा दादी अम्मा बोलदी, मेरा मुन्नु सुत्तेआ, चल सेई रै बच्चा कोई गल्ल नी सारी उमर एई कम्म करनां

पापा जी: ओ छोरूआ तौली उठ, उण नी उठेआ ता कदी नी उठणा, तालू जी तिना अपणिया अम्मा नै फोने च लगी रैंदा तालू नी लुभदा सौणा भी है।

पैण: कुतेआ उठ, सारे कम मैं ई करने तू कमाणे जो मरी चलेआ।

पाऊ: ओ छोरू उठी खडत्रो मम्मी आई तां डांग भी चलणीं

मम्मी: ए कंजर ता सुख कटणा आया, कम्म कमाणा नी इक्को कम सौणे दा।

प्रतिभा
अनुक्रमांक– 16401
बी॰ए॰दूजा सैमेस्टर

# इसजो जरूर पड़नेओ

गरीब दूरे तक चलदा खाणा खाणे तांई,
अमीर भी दूरे तक चलदा खाणा पचाणे ताई।
कुसी आल खाणे जो इक वेले दी रोटी नी,
कुसी आल खाणे ताई वक्त नी।
कोई लाचार ए तां कोई बिमार ए,
कोई बिमार ए तां कोई लाचार ए।
कोई अपणेआ तांई रोटी छड़ी दिदां,
कोई रोटियां तांई अपणे आ की छड़ी दिदां।
कदी छोटी जेई चोट लगणे पर असा रोई पौंदें थे,
अज दिल टूटणे पर भी सम्भली जादें।
पहलै लड़ना मनाणा कोई रोजे कभ था,
अज इक बरी लड़ी के रिशते खत्म होई जानदे।
जिन्दगिया सांजों बड़ा कुछ सिखाया,
अच्छे बुरे दा फर्क कराया,
तांई ता बोलदे प्यारे ने रेया दोस्तो।

पल्लवी
अनुक्रमांक–16402
बी॰ए॰दूजा सैमेस्टर

# अलविदा दोस्तो

अलविदा गलाणे दा हुण इक साल दोस्तो
दिल तां नी करदा इस कॉलेज ते जाणे
दा दोस्तों, पर ए है जग दी पुराणी रीत दोस्तो।
साढ़े कॉलेज दा डिसीप्लेन है बड़ा सोणा दोस्तो। साढ़े प्राचार्य हर बेले रैंदे ने पढ़ाने जो तैयार दोस्तो। साड़े लेक्चरर भी हैन बड़े होशियाय दोस्तो। जेड़े हर बेले रैंद ने कुछ न कुछ दसणे जो तैयार दोस्तो। गल्ला–गल्लां च होई जाणे तीनसाल दोस्तो फिरी साढ़े जाणे द। आई जाणा टैम दोस्तों। इस कॉलेज च जूनियरां भी दित्ती सीनियरां जो पूरी रिसपेक्ट दोस्तों अगर होई गई होवे पलेखे ते साजो ते गलती, ता करी दिन्नयो माफ दोसतो। इक साले बाद साडा आई जाणा अलविदा गलाणे दा टैम दोस्तों।

मीनाक्षी गुलेरिया
बी॰ए॰–चौथा सैमेस्टर
रोल नं. 805

# मत पूछै मिए......

राती बराती जालू तेरी याद आई जांदी,
मत पूछैं मिए दिले जो किया तड़फाई जांदी
... दिन मेरा कम्मा च मुकी जांदा,
थकी जादां, मैं गलादां भी रूकी जादां।
मेकी उदास दिक्खी मितर मेरा पूछी लैंदा,
दस मडेया ''निशान्ता'' कुथु तेरा मन रैंदा।
क्या–क्या दसैं, क्या–क्या समझां,
गल्ल जे सच्ची दसैं अपणा हस बणावां
पर तेरी हर अदा दिले च काहली पाई जांदी,
मत पूछें मिए दिले जो कियां तड़फाई जांदी,
घरै पचैलिया आले कमरे में किल्ला सुतया होन्दा
क्या दसै अक्खासामणे तेरा चेहरा होन्दां
अक्खा बंद करी तेरी ख्यालां च खोई जान्दा
बंद अखां चो इक अध अशरू भी चौंई पौंदा।
ख्याला च खोयो कालू निंदर पेई जान्दी,
ईया तेरे बारे सोचदे भियाग होई जान्दीं
लै मिए इक होर दिन तेरे बिना टपाणा,
संझा तक सैई हाल होई जाणा।
पर संझा मम्मिया दी इक जफफी सब भुलाई जान्दी
मत पूछै मिए दिले जो किया तड़फाई जांदी

निशान्त चौधरी
अनुक्रमांकः 501
बी॰ए॰चौथा सैमेस्टर

# मत पीदें तुसा शराब

मत पीदें तुसा शराब,
ए करदी ए जिन्दगी खराब।
जे पी लेणा इक पैग,
ता होणा बदनामं
पहले दोस्ता मुफ्त पियाणी,
फिरी तूं अपणी जेब मुकाणी।
जे पींगे इक बारी,
तां दिल करदा बारी–बारी।
जे पींगे राती ध्याड़ी,
तां उजड़नी घर बारी।
नशा कोई नी खरा होंदा,
नशे च माणू क्या नी करदा।
उम्र तिसदी हर पल घटदी,
कोई तिसजो खरा नी बोलदा।
मत पिंदे तुसा शराब,
ए करदी जिन्दगी खराब।

शिवानी
बी॰काम॰–चौथा सैमेस्टर
अनुक्रमांक : 1058

# दिखणेओ, हसदे मत

1. मठाः तू मिजों कने कितना प्यार करदी?
मठीः जिओ सिम दे बैलेंस जितना।
मठाः खज्जल............सै ता अनलिमिटेड पर सिर्फ मार्च तक........
2. मैं बाहरवीं क्लासा च पढदा था, मेकी सै पसन्द आई.........मैं तिसा की प्रपोज किता, बोलदी नई अडत्रेया मैं अपणा फ्यूचर बणाणा.......कल मिल्ली मेकी सै, दिखया ता ''गोए दे टोकरूए'' लेई की चलियो थी। मैं सोच्या खरा फ्यूचर बणाया।
3. इक बरी इक शराबी बोलदा जे मेरे हत्थे च सरकार होन्दी तामैं देश दी तकदीर बदली दिन्दा.......तां उसदी लाड़ी बोलदी–कंजरा पहले अपणा पजामा तां बदली ले, कल्ले दा नेरी सलवारपाई के घुम्मादा.....।
4. हिमाचली मुंडुः मैं व्याह नी करना, मिजो जणासा तो डर लगदा........
मुडुए दा पापाः करी लै मुंडेआ, फिरी सिर्फ तिया ते लगणा बाकी सारियां छैल लगाणिया.......

अरविन्द गुलेरिया
बी॰काम॰चौथा सैमेस्टर

# अजकले दे स्टूडैंट कनै तिनादी लाइफ

रेन जेबा पाणा, कापी इक हत्थे लैणी सजाई,
अखबारा पर नजर कुमाणी की कुण नौई पिक्चर आई।

अजकले दियां कुड़िया बाल दित्ते कटाई,
भियागा उठी करदिया ओठां दी लिपाई।

ओके टाटा, ओके बाए, चौई पासैं दिदियां सुणाई,
पढ़ाईया दा अखर नी औंदा नाटका दा नां
दिदियां गणाई।

अजकले दे छोरू जालू घरे छुटियां औंदे,
हत्थे घड़ी, मुण्डे बैग, खिचड़ी भाषा दी पकांदे।
भाषा इना दीसुणी के लोक मजाक उड़ादें,
पर इना जो नी परवाह, ऐ वेशर्म नी शर्मादें।

रिया
बी॰ए॰–दूजा सैमेस्टर
अनुक्रमांक–16188

# "नशे दी बीमारी"

नशा ए बुरी बिमारी, पर इसजो लोक समझदे
दिलो जान ते प्यारी,
जिसियो ए लग्गी सै करी लै मरने दी तैयारी.........
.....

केई लोक करदे नशे खातिर उधार, जे दुकानदार
मंगे तो होन्दी इना जो बिमारी,
रोज ठेके पर जाया कनै पिन्दे शराब, महातड़ा
तमाहतड़ा दा करदे जीणा खराब............
घरे रोंदी लाड़ी कनै नोटां उड़ादे नशे दे व्यापारी,
जे पींगे तम्बाकू ता घरैं बकदा बापू
जै पीणी भंग तां घरै अम्मा करदी तंग,
जे पीणी शराब का कम तां घर पौंदी खप........

रिपिका
बी॰काम॰दूजा सैमेस्टर
अनुक्रमांक : 16172

# पहाड़ी मुंडए दी गल्ल

इक बरी इक मुंडु होंदा, सै बडा पारी मोटा ओंदा इक बरी उन्नी सोचया की सारे मेकी मोंटा–मोटा गलादे......तिन्नी सोचया मैं मरी जाणा कनै बडिया देया लाये पर चड़ी के छाल मारी दिन्दा.......जित्थू सैं पौंदा तित्थू लोक किट्ठे होई जान्दे, जालू मुंडुए जो होश औंदी ता सै पुछदा मैं जिन्दा ए की मरीया। ता लोक गलान्दे नई बच्चा तू ता जिंदा ए पर तेरे थल्लै आई करी तिन लोक मरीयो।

शालिनी देवी
बी॰काम॰–दूजा सैमेस्टर
अनुक्रमांक–19198

# प्रपत्र – 4

## पत्रिका के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में विवरण

## हलदूण

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रकाशक का नाम | : | राजकीय महाविद्यालय<br>नगरोटा सूरियां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) |
| 2. | प्रकाशक की अवतारिता | : | वार्षिक |
| 3. | प्रकाशक का नाम | : | डॉ. एच.एल. धीमान |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | पता | : | राजकीय महाविद्यालय<br>नगरोटा सूरियां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) |
| 4. | मुख्य सम्पादक का नाम | : | श्री नरेश धीमान |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | पता | : | राजकीय महाविद्यालय<br>नगरोटा सूरियां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) |
| 5. | मुद्रणालय का पता | : | सिटी लाईट प्रिंटर्ज, पालमपुर |
| 6. | पत्रिका के स्वामी का विवरण | : | राजकीय महाविद्यालय<br>नगरोटा सूरियां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) |

मैं नरेश धीमान यह घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

नरेश धीमान
मुख्य सम्पादक

अधिकारी, देहरा के साथ पौधारोपण के अवसर पर कॉलेज स्टाफ व छात्र–छात्राएं।

प्रतिभा खनन हेतु आयोजित 'पोस्टर मेकिंग' प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

राजकीय महाविद्यालय, नगरोटा सूरियाँ (काँगड़ा) के प्रथम बैच (2014–2017) के
बी.ए./बी.कॉम. के विद्यार्थीगण कॉलेज स्टाफ के साथ